आज़ादी का अमृत महोत्सव
1947-2022

सामाजिक विज्ञान

अभ्यास पुस्तिका

वेद-भूषण - II वर्ष / प्रथमा - II वर्ष / कक्षा सातवीं

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

(शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा स्थापित एवं मान्यता प्राप्त)

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्ति÷पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति÷॥
व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्व ँ शान्तिः
शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि॥
यां रक्षन्त्यस्वप्ना विश्वदानीं देवा भूमिं पृथिवीमप्रमादम्।
सा नो मधु प्रियं दुहामथो उक्षतु वर्चसा॥
यार्णवेधि सलिलमग्र आसीद्यां मायाभिरन्वचरन्मनीषिणः।
यस्या हृदयं परमे व्योमन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे॥
मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः।
माद्धीर्न्नः सन्त्वोषधीः॥
मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिव ँ रजः॥ मधुद्यौरस्तुनः पिता॥
मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँ२ऽअस्त्वसूर्य्यः॥ माद्धीर्ग्गावोभवन्तुनः॥
मातृतमा विषस्य स्थातुर्जगतो जानित्री।

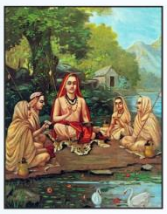

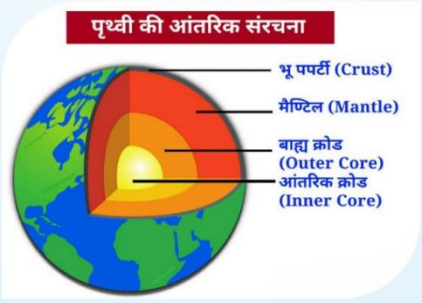

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)
(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)
Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

विषयानुक्रमणिका

क्रम संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
	भूगोल	
1	हमारी पृथिवी	3-6
2	हमारा पर्यावरण	7-9
3	प्राकृतिक वनस्पति एवं जैव विविधता	10-11
4	मरुस्थल में जीवन	12-14
5	मानवीय पर्यावरण एवं अन्योन्य क्रियायें	15-17
	इतिहास	
6	हुए परिवर्तनों को समझनावीं सदी के मध्य 18 वीं से 7	18-20
7	मध्यकालीन भारत- नए राजवंशो का उदय	21-26
8	मध्यकालीन भारतीय वास्तुकला	27-28
9	जनजातीय और यायावर समुदाय	29-30
10	मध्यकालीन भक्ति आंदोलन और क्षेत्रीय संस्कृतियों का उदय	31-33
11	अठारहवीं शताब्दी के क्षेत्रीय राजनीतिक शक्तियाँ	34-35
	नागरिक जीवन	
12	स्वास्थ्य और सरकार	36-37
13	राज्य शासन की कार्य प्रणाली	38-39
14	सञ्चार माध्यम और विपणि: (बाजार) की समझ	40
15	समानता एवं लिंग बोध	41
	परिशिष्ट	42-43

अध्याय–1

हमारी पृथिवी

- हमारी पृथिवी एक के ऊपर एक संकेद्री परतों से मिलकर बनी हुई है। ऋग्वेद में उल्लेख है कि **"पृथिव्याः सप्त धामभिः"**। (1.22.16) अर्थात् पृथिवी सात प्रकार के धामों (परतों) से बन्धी हुई है।
- अथर्ववेद में कहा गया है कि- **"श्याममयोस्य मांसानि लोहितमस्य लोहितम्"**। (11.3.7) इस मन्त्र में लोहे को पृथिवी का मांस एवं ताँबे को पृथिवी का रक्त बतलाया गया है।
- आधुनिक भू-वेत्ताओं ने पृथिवी की आन्तरिक संरचना को तीन भागों में बाँटा है- 1. भू-पर्पटी 2. मैण्टल 3. क्रोड। पृथिवी का व्यास 12742 कि.मी. हैं। पृथिवी के आयतन का 1% भाग भू-पर्पटी, 84% भाग मैंटल और 15% भाग क्रोड हैं।
- पृथिवी का ऊपरी और ठोस भाग, जो मुख्यत: बेसाल्ट चट्टानों से निर्मित है 'भू-पर्पटी' कहलाता है। भू-पर्पटी महाद्वीपीय क्षेत्रों में लगभग 35 कि.मी. तथा सागरीय क्षेत्रों में 5 कि.मी. की गहराई तक है, अर्थात पृथिवी की यह परत महाद्वीपीय क्षेत्रों में मोटी तथा सागरीय क्षेत्रों में अपेक्षाकृत पतली होती है। भू-पर्पटी के दो भाग हैं- सियाल (SIAL) और सीमा (SIMA)। सियाल क्षेत्र में सिलिका, एलुमिना एवं सीमा क्षेत्र में सिलिकन एवं मैग्नेशियम की बहुलता है।
- भू-पर्पटी के निचले भाग को 'मैण्टल' कहते हैं। यह लगभग 2900 कि.मी. की गहराई तक फैला होता है। यह पृथिवी के निचले भाग से लेकर क्रोड के ऊपरी भाग तक फैला होता है।
- पृथिवी की सबसे आन्तरिक परत 'क्रोड' होती है, जिसकी त्रिज्या लगभग 3500 किलोमीटर है। पृथिवी का क्रोड भाग मुख्यत: निकिल और लोहे की बनी होती है, जिसे निफे (नि-निकिल+फे-फेरस) कहते हैं। क्रोड का तापमान एवं दाब काफी उच्च होने के कारण सभी पदार्थ मैग्मा के रूप में पाये जाते हैं।
- पृथिवी के शैलों की परतों में दबे मृत पौधों एवं जीव-जन्तुओं के अवशेषों को जीवाश्म कहतें हैं।
- पृथिवी की आन्तरिक संरचना का ज्ञान हमें शैलों के घनत्व, भूगर्भिक ताप, ज्वालामुखी क्रियाएँ तथा भूकम्पीय तरंगों के आधार पर प्राप्त होता है। इन्हें पृथिवी की 'विवर्तनिक शक्तियाँ' भी कहते हैं।
- पृथिवी की भू-पर्पटी का निर्माण करने वाले खनिज पदार्थों के प्राकृतिक पिण्ड को 'शैल' कहते हैं। शैलों को मुख्यत: तीन भागों में बाँटा गया है- 1. आग्नेय शैल 2. अवसादी शैल 3. कायान्तरित शैल।

- आग्नेय शैलों का निर्माण ज्वालमुखी उद्गार के समय पृथिवी के गर्भ से निकलने वाले लावा के ठण्डा होकर ठोस हो जाने पर होता है। आग्नेय शैल दो प्रकार के होते हैं- 1. बहिर्भेदी 2. अन्तर्भेदी।
- जब लावा पृथिवी के अन्दर स्थित मैग्मा सतह पर आकर ठोस रूप धारण कर लेता है तो 'बहिर्भेदी आग्नेय शैल' का निर्माण होता है, जैसे- बेसाल्ट शैलें। दक्षिण भारत के पठार का निर्माण बेसाल्ट शैलों से हुआ है। द्रवित लावा कभी-कभी भूपर्पटी के अन्दर ही ठण्डा हो जाता है, इस क्रिया से बने ठोस शैलों को 'अन्तर्भेदी आग्नेय शैल' कहते हैं। ग्रेनाइट पत्थर अन्तर्भेदी आग्नेय शैल के उदाहरण है।
- जब शैल टूटकर छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त होकर एक स्थान पर परत के रूप में जमा होकर ठोस रूप धारण कर लेते हैं, तो उन्हें 'अवसादी' या 'परतदार शैल' कहते हैं। बलुआ पत्थर, चूना पत्थर, कोयला, स्लेट, नमक की चट्टान, शेलखरी आदि अवसादी शैल के उदाहरण हैं। दामोदर नदी, महानदी तथा गोदावरी नदी की बेसिनों में स्थित अवसादी चट्टानों में कोयला पाया जाता है। अधिकांश जीवाश्म एवं खनिज तेल, अवसादी शैलों में ही पाये जाते हैं।
- जब आग्नेय या अवसादी शैल ताप, दाब एवं रासायनिक क्रियाओं के कारण वलित या भ्रंसित होते हैं, तो 'कायान्तरित शैल' का निर्माण होता है। स्लेट, शिस्ट, क्वार्टजाईट, संगमरमर, नीस आदि कायान्तरित शैल के उदाहरण हैं।
- पृथिवी के केन्द्र की गहराई अनुमानत: समुद्र की सतह से छ: हजार किलोमीटर है, जहाँ मानव का पहुँचना असम्भव है। विश्व की सबसे गहरी खान (4 किलोमीटर) दक्षिण अफ्रीका में स्थित है।
- पृथिवी की स्थलमण्डलीय प्लेटें सदैव गतिशील हैं। इसका कारण पृथिवी के आन्तरिक भाग में मैग्मा का वृत्तीय रूप में गतिशील होना है। पृथिवी के प्लेटों की गति वर्ष में लगभग कुछ मिलीमीटर होती है, इसके कारण पृथिवी की सतह में भी परिवर्तन होता है। पृथिवी की गति में प्रयुक्त होने वाले बल दो प्रकार के होते हैं- 1. अन्तर्जनित बल (एण्डोजेनिक फोर्स) 2. बहिर्जनित बल (एक्सोजेनिक फोर्स)।
- पृथिवी के आन्तरिक भाग में लगने बल को 'अन्तर्जनित बल' (एण्डोजेनिक फोर्स) कहते हैं। अन्तर्जनित बल कभी तेज गति तो कभी धीमी गति उत्पन्न करते हैं, जिसके कारण पृथिवी पर ज्वालामुखी एवं भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं। पृथिवी की सतह पर वाह्य कारको के प्रभाव से उत्पन्न होने वाले बल को 'बहिर्जनित बल' (एक्सोजेनिक फोर्स) कहते हैं। यह अपक्षय और अपरदन में सहायक है।
- पृथिवी के धरातल पर वह दरार या छिद्र जिससे समय-समय पर पृथिवी के अन्दर से तप्त लावा, गैसें, भाप, आदि बाहर निकलता है, उसे ज्वालामुखी कहते हैं।

- क्रियाशीलता के आधार पर ज्वालामुखी को तीन भागों में बाँटा जा सकता है- 1. सक्रिय ज्वालामुखी 2. प्रसुप्त ज्वालामुखी 3. शान्त ज्वालामुखी। वे ज्वालामुखी जिनके मुख से निरन्तर धुआँ, लावा, गैस, धूल आदि पदार्थ निकलते रहते हैं 'सक्रिय ज्वालामुखी' कहलाते हैं, जैसे- विसुवियस (इटली) तथा का स्ट्रम्बोली (भू-मध्यसागर) ज्वालामुखी। जो लम्बे समय तक शान्त रहने के पश्चात् अचानक सक्रिय हो उठते हैं 'प्रसुप्त ज्वालामुखी' कहलाते हैं। जापान का फ्यूजीयामा, इण्डोनेशिया का क्राकाओ ऐसा ही ज्वालामुखी है। वे ज्वालामुखी जो अब निष्क्रिय हो चुके हैं 'शान्त ज्वालामुखी' कहलाते हैं। अफ्रीका का किलिमञ्जारो, ईरान का कोह सुल्तान शान्त ज्वालामुखी हैं।
- ज्वालामुखी उद्गार के अन्य रूप- 1. गीजर 2. उष्ण स्रोत 3. धुँआरे हैं। भूमि छिद्र से होकर भूमिगत जल स्रोतों से वाष्प और गर्म जल का तीव्र निकास 'गीजर' कहलाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित येलोस्टोन पार्क का ओल्ड फेथफुल इसका उदाहरण है। उष्ण स्रोतों से निरन्तर वाष्प और जल प्रवाहित होता रहता है 'उष्ण स्रोत' कहलाता है, जैसे लद्दाख का पुगा, बिहार में राजगीर, हरियाणा में सोना नामक स्थान आदि के उदाहरण हैं। जब ज्वालामुखी उद्गार से लावा एवं अन्य पदार्थ निकलना बन्द हो जाते हैं और ऐसे स्थान से गर्म जलवाष्प और गैसें निकलने लगती हैं यह 'धुँआरा' कहलाता है, जैसे- अलास्का के कटमई का धुँआरा।
- जब पृथिवी की सतह के कम्पन को 'भूकम्प' (Eartah Quake) कहते हैं। ज्वालामुखी क्रिया, भूपटल में वलन एवं भ्रन्सन, आन्तरिक गैसों का विस्तार, भूसन्तुलन में अव्यवस्था, भू-पटल में सिकुड़न, भू-विवर्तनिक प्लेट एवं मानव जनित कारक भूकम्प के प्रमुख कारण हैं।
- भूकम्प की तीव्रता भूकम्पलेखी (सीस्मोग्राफी) नामक यंत्र से मापी जाती है। भूकम्प की तीव्रता मापन के लिए रिक्टर पैमाना का प्रयोग किया जाता है।
- भूकम्प की विश्व में तीन प्रमुख श्रृंखलाएँ हैं- 1. प्रशान्त महासागर तटीय क्षेत्र 2. मध्य महाद्वीपीय क्षेत्र 3. मध्य अटलाण्टिक क्षेत्र। भारत में हिमालयी क्षेत्र, कच्छ का रन, दिल्ली, महाराष्ट्र, जम्मू और कश्मीर आदि भूकम्प की दृष्टि से सर्वाधिक संवेदनशील क्षेत्र हैं।
- नदियों के परिवहन, अपरदन एवं निक्षेपण की क्रिया से निर्मित स्थल आकृतियों को 'नदी निर्मित स्थलाकृतियाँ' कहते है। नदियों को लम्बवत् कटाव से निर्मित वी (V) आकार की घाटी को 'गार्ज' एवं 'कैनियन' कहते है। जब नदियों का जल उँचाई पर स्थित खड़े ढाल से वेग पूर्वक नीचे गिरने से 'जल प्रपात' और 'झरने' का निर्माण होता है।

- जब कठोर शैलों का ढाल नदी के साथ मिलता है तो 'क्षिप्रिका' का निर्माण होता है। जब नदी के प्रवाह मार्ग में जल दाब एवं घर्षण की क्रिया से 'जलगर्तिका' का विकास होता है।
- नदियों द्वारा पर्वतों के तल के पास अर्द्धवृत्ताकार रूप में निक्षेपण को 'जलोढ़ पंख' कहते हैं। नदी घाटियों के दोनों किनारों पर पुनर्युवन (अधिक जल भराव) के कारण निर्मित सीढ़ीदार संरचना को 'नदी वेदिका' कहा जाता है। नदियाँ जब मैदानी भागों में आती है तो उसके बहाव में आने वाले अनेक मोड़ों को 'नदी विसर्प' कहते हैं। ये विसर्प बड़े होकर 'गोखुर झील' या 'झाड़न झील' का निर्माण करते हैं। नदियों द्वारा बहाकर लाई गई गाद व मिट्टी जमकर निर्मित समतल मैदान, 'बाढ़कृत मैदान' कहलाता है।
- नदियों द्वारा बहा कर लाए गए अवसाद समुद्र के तटवर्ती क्षेत्रों में त्रिभुजाकार आकृति में निक्षेपित होकर 'डेल्टा' का निर्माण करते हैं। भारत में ब्रह्मपुत्र नदी के मुहाने पर स्थित सुन्दरवन का डेल्टा विश्व प्रसिद्ध है। नदियों की जलधारा जहाँ समुद्र में गिरती है वहाँ नदियों के मुहाने को 'ज्वारनद मुख' कहते हैं।
- बर्फ की नदियों को 'हिमानी नदियाँ' कहते हैं। हिमानी के अपरदन और निक्षेपण द्वारा U आकार की घाटी, लटकती घाटी, हिमगह्वर, हिमोढ़ स्थलाकृतियों का निर्माण होता है।
- पवन के अपरदन और निक्षेपण से छत्रक शिला, इन्सेल वर्ग, बालू का टीला, स्तम्भ, यारडंग एवं ज्यूगेन नामक स्थलाकृतियों का निर्माण होता है। उदाहरण, चीन का विशाल लोएस का मैदान है।
- समुद्री लहरों के लगातार तट से टकराने के कारण भू-शैलों में दरार पड़ जाती है और धीरे-धीरे ये दरारें चौड़ी होकर समुद्री गुफा का रूप ले लेती हैं जो 'तटीय मेहराब' कहलाती हैं। समुद्री जल के ऊपर लगभग ऊर्ध्वाधर उठे हुए ऊँचे शैलीय तटों को 'समुद्री भृगु' कहते हैं। समुद्री लहरें तटों पर अवसाद जमा कर 'समुद्री पुलिन' का निर्माण करती हैं।

प्रश्नावली

1. वेद मन्त्र सहित पृथिवी की आन्तरिक संरचना का उल्लेख कीजिए।
2. शैल किसे कहते हैं? शैल के प्रकार को सोदाहरण समझाइए।
3. ज्वालामुखी किसे कहते है? ज्वालामुखी के प्रकार बताइए।
4. भूकम्प पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
5. 'नदी निर्मित स्थलाकृतियों' का विस्तार से उल्लेख कीजिए।

अध्याय- 2

हमारा पर्यावरण

- अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से 'पर्यावरण' एक नूतन अवधारणा है। 'पर्यावरण' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Environment' का हिन्दी रूपान्तर है। 'Environment' के लिए 'पर्यावरण' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग डॉ. रघुवीर द्वारा तकनीकी शब्दकोष "कम्प्रिहेंसिव इंग्लिश-हिन्दी डिक्शनरी" में किया गया। शब्द व्युत्पत्ति की दृष्टि से देखा जाए तो 'पर्यावरण' संस्कृत भाषा के 'परि' उपसर्ग के साथ 'आवरण' शब्द की सन्धि से बना है, जिसका 'अर्थ चारों ओर से ढका हुआ है'। दूसरी शब्द उत्पत्ति के अनुसार 'परि' और 'आङ्' उपसर्ग पूर्वक 'वृञ्' (वरण करने के अर्थ में) धातु को 'ल्युट' प्रत्यय करने से 'पर्यावरण' शब्द निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ 'प्राकृतिक प्रकृति है'। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'हमारे चारों ओर विद्यमान वातावरण, वस्तुएँ, परिस्थितियाँ आदि को संयुक्त रूप से पर्यावरण कहते हैं'।
- पर्यावरण के दो भाग हैं- अजैविक और जैविक। अजैविक के अन्तर्गत हवा, पानी, मिट्टी तथा खनिज, जलवायु और सौर ऊर्जा को शामिल किया गया है। जैविक के निर्माण में पौधों, जानवरों, विभिन्न जीवाणु आदि को शामिल किया गया है।
- पर्यावरण के जैविक और अजैविक घटक आपस में अन्त: क्रिया कर एक तन्त्र स्थापित करते हैं, जिसे हम 'पारिस्थितिकी तन्त्र' (Ecosystem) कहते हैं।
- भौतिक भूगोल की दृष्टि से पृथिवी पर स्थित पर्यावरण के दो प्रमुख घटक हैं- प्राकृतिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण। जल, वायु, भूमि, जीव-जन्तु, पेड़-पौधे आदि मिलकर 'प्राकृतिक पर्यावरण' का निर्माण करते हैं। मानव द्वारा कृत्रिम रूप से निर्मित पर्यावरण जैसे- विद्युत, मशीनी उपकरण, भवन, पार्क एवं समस्त भौतिक वस्तुओं 'मानव निर्मित पर्यावरण' कहते हैं। प्राकृतिक पर्यावरण के प्रमुख भाग हैं- 1. स्थल मण्डल 2. जल मण्डल 3. वायु मण्डल 3. जैव मण्डल।
- पृथिवी का वह भाग जिस पर पर्वत नदियाँ, पठार, मैदान आदि विभिन्न रूप में पाये जाते हैं 'स्थल मण्डल' कहलाता है। स्थल मण्डल पृथिवी के लगभग 28 से 29 प्रतिशत भाग पर विस्तृत है।
- पृथिवी के लगभग 71% भाग पर फैले जलीय क्षेत्र को 'जल मण्डल' कहते हैं। 'जल मण्डल' में सागरों और महासागरों के अतिरिक्त नदियाँ, झील एवं भूमिगत जल भी शामिल है।
- पृथिवी की सतह पर उपलब्ध 97% जल सागरों-महासागरों में स्थित है। शेष 3% जल मीठा है, जिसका 2.4% ग्लेशियरों और ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ के रूप में जमा है। शेष 0.6% जल नदियों, झीलों और तालाबों और भूमिगत जल के रूप में स्थित है।

- सागरों एवं महासगरों का जल सदैव गतिमान रहता है। इनकी गतियों को मुख्यत: तीन श्रेणी में विभाजित किया जा सकता है- 1. तरङ्गें 2. ज्वार-भाटा 3. महासागरीय धाराएँ।
- तरङ्गें एक प्रकार की ऊर्जा हैं, जो वायु द्वारा जल में उत्पन्न होती हैं। तरङ्गों में जल के कण छोटे वृत्ताकार रूप में गति करते हैं। वायु के कारण तरङ्गें सागरों एवं महासगरों में लहरों के रूप में गति करती हैं और इन लहरों में व्याप्त ऊर्जा तट रेखा पर निर्मुक्त होती हैं।
- सागरों के अन्दर उत्पन्न भूकम्पीय लहरों को सुनामी कहते हैं। 26 दिसम्बर, 2004 को हिन्दमहासागर में उठी सुनामी तरङ्गें अति विनाशकारी थी। सुनामी के कारण भारत के आन्ध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्र, तमिलनाडु, केरल, पुद्दुचेरी तथा अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह सर्वाधिक प्रभावित हुए थे।
- समुद्र में प्रतिदिन नियमित रूप से जल का लहरों के रूप में उठना एवं गिरना 'ज्वार-भाटा' कहलाता है। पूर्णिमा, अमावस्या और ग्रहण काल में समुद्र में अधिक ऊँचाई वाले ज्वार आते हैं।
- सामान्यत: भूमध्य रेखा के निकट गर्म महासागरीय धाराएँ पैदा होकर ध्रुवों की ओर बहती हैं, जिन्हें 'गल्फस्ट्रीम' या 'गर्म जलधारा' कहते हैं। अलास्का धारा, एल नीनो धारा आदि गर्म जलधाराएँ हैं।
- उच्च अक्षांशों से निम्न अक्षांशों की ओर बहने वाली जल धाराओं को 'शीत जलधारा' कहते हैं। लेब्राडोर धारा, क्यूराल धारा, हम्बोल्ट धारा आदि शीत महासागरीय धाराएँ है।
- पृथिवी के चारों ओर व्याप्त गैसीय आवरण को 'वायुमण्डल' कहते हैं। वायुमण्डल में विविध गैसें जैसे- नाइट्रोजन (78%), ऑक्सीजन (21%), ऑर्गन (0.9%) कॉर्बनडाइऑक्साइड, हाइड्रोजन, हीलियम और ओजोन आदि के साथ जलवाष्प व धूल के कण भी विद्यमान हैं।
- पृथिवी की सतह से ऊपर की ओर वायुमण्डल की पाँच परतों है- 1. क्षोभमण्डल 2. समतापमण्डल 3. मध्यमण्डल 4. बाह्यमण्डल 5. बहिर्मण्डल।
- 'क्षोभ मण्डल' की औसत ऊँचाई पृथिवी की सतह से लगभग 14 से 18 कि.मी. है। मौसम सम्बन्धी घटनाएँ , जैसे- श्वसन, कोहरा, वर्षा, ओलावृष्टि आदि इस परत में होती हैं।
- वायुमण्डल में लगभग 16 से 50 कि.मी. की ऊँचाई तक विस्तृत क्षेत्र 'समताप मण्डल' कहलाता है। इस मण्डल में तापमान समान रहता है, अत: यह भाग वायुयानों की उड़ान के लिए उपयुक्त है। समताप मण्डल में ओजोन गैस की परत होती है, जो सूर्य से आने वाली विकिरणों का शोषण करती है।।
- समताप मण्डल के ऊपर लगभग 80 किलोमीटर की ऊँचाई तक 'मध्यमण्डल' का विस्तार है। मध्य मण्डल के बाद लगभग 80 से 400 कि.मी. तक विस्तृत परत 'आयनमण्डल' कहलाता है। पृथिवी से प्रसारित रेडियो तरङ्गें आयनमण्डल के द्वारा पुन: पृथिवी पर परावर्तित कर दी जाती हैं।

- हमारे वायुमण्डल में अन्तिम और विस्तृत परत को 'बहिर्मण्डल' कहते हैं। यहाँ पर वायु बहुत विरल तथा हीलियम एवं हाइड्रोजन गैसें प्रचुर मात्रा में मिलती है।
- वातावरण में नित्य प्रतिदिन होने वाले परिवर्तनों की स्थिति को 'मौसम' कहते हैं, उदाहरण के लिए आर्द्र, शीत, गर्म और शुष्क मौसम आदि।
- पृथिवी के किसी भाग में लम्बे समय तक की औसत मौसमी दशाओं को 'जलवायु' कहते हैं।
- वायु में उपस्थित ताप एवं शीत के परिणाम को तापमान कहते हैं। तापमान मापन की मानक इकाई डिग्री सेल्सियस है। तापमान को मापने के लिए तापमापी यन्त्र का प्रयोग किया जाता है।
- आतपन से आशय सूर्य से निकलने वाली उस उर्जा या ताप से है, जिसे पृथिवी रोक लेती है। तापमान के वितरण को प्रभावित करने वाला कारक 'आतपन' है।
- पृथिवी की सतह पर वायु द्वारा लगाये गए दाब को 'वायुदाब' कहते हैं। वायुदाब को मापने के लिए 'वायुदाबमापी यन्त्र' का प्रयोग करते हैं।
- उच्च से निम्न दाब क्षेत्र की ओर गतिशील वायु को 'पवन' कहते हैं। सामान्यत: तीन प्रकार की पवनें होती हैं- 1. स्थाई पवन 2. स्थानीय पवन 3. मौसमी पवन।
- स्थाई पवन को 'पूर्वा' या 'व्यापारिक' पवन भी कहते हैं। ये पवनें वर्ष भर उत्तरी गोलार्ध में उत्तर-पूर्वी तथा दक्षिणी गोलार्ध में दक्षिण-पूर्वी दिशा में बहती है।
- मौसम के अनुसार प्रवाहित होने वाली पवन को 'मौसमी पवन' कहते हैं। ये पवन ग्रीष्मकाल में समुद्र से स्थल की ओर तथा शीतकाल में स्थल से समुद्र की ओर चलती है।
- निम्न वायुमण्डलीय दवाब के चारों ओर तेज गर्म हवा को 'चक्रवात' कहते हैं। चक्रवात को उत्तरी गोलार्ध में 'हरीकेन' या 'टाइफून' कहते हैं।
- जब जल की बूँदें भारी होकर वायु में तैर नहीं पातीं हैं तब वर्षा के रूप में भूमि पर गिरती हैं। वर्षा तीन प्रकार की होती है- 1. संवहनीय वर्षा 2. पर्वतीय वर्षा 3. चक्रवाती वर्षा।
- पृथिवी का वह भाग जहाँ सभी प्रकार का जीवन विद्यमान है 'जैव मण्डल' कहलाता है। जैव मण्डल में समस्त जन्तु व पादप जगत सम्मिलित हैं। इसका विस्तार स्थल, जल एवं वायु मण्डल तक होता है।
- मानव द्वारा अपने भौतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रकृति के साथ व्यापक छेड़-छाड़ के कारण प्राकृतिक पर्यावरण का सन्तुलन बड़े स्तर प्रभावित होना 'पर्यावरण प्रदूषण' कहलाता है।
- पर्यावरण के शोधन में अग्निहोत्र का विशिष्ट महत्त्व है। विविध प्रयोग द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि, नित्य अग्निहोत्र से 8 हजार घन फीट वायु प्रदूषण रहित होने के साथ 96% कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

- पर्यावरण की दृष्टि से पृथिवी, आकाश, नदियों, वनस्पतियों आदि का विशिष्ट महत्त्व है। वैदिक वाङ्मय में पृथिवी को माता और आकाश को पिता, नदियों, वनस्पतियों एवं सम्पूर्ण प्रकृति को माता, देवी एवं देवरूप बताया गया है। आचार्य सायण ने अपने भाष्य में जल के 16 नामों का उल्लेख किया है।
- वैश्विक स्तर पर 1972 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यू.एन.ई.पी.) बना। 1992 में पर्यावरण और विकास विषय पर आयोजित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में कार्यक्रम-21 जारी किया गया। 2000 ई. के 'अर्थ चार्टर कमीशन' की त्रिदिवसीय बैठक के तीसरे दिन भारतीय प्रतिनिधियों ने अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त की चर्चा करते हुए स्पष्ट किया कि वेदों में पर्यावरण संरक्षण के सूत्र भरे पड़े हैं।

प्रश्नावली

1. पर्यावरण का अर्थ स्पष्ट करते हुए प्राकृतिक पर्यावरण का उल्लेख कीजिए।
2. तरङ्ग किसे कहते है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
3. वायुमण्डल किसे कहते है? वायुमण्डल की संरचना पर प्रकाश डालिए।
4. मौसम और जलवायु में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
5. पर्यावरण प्रदूषण किसे कहते हैं? वैदिक दृष्टि से पर्यावण के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

अध्याय- 3

प्राकृतिक वनस्पतियाँ एवं जैव विविधता

- मनुष्य की सहायता के बिना उपजने वाली वनस्पतियाँ, 'प्राकृतिक वनस्पति' कहलाती हैं। वे प्राकृतिक वनस्पतियाँ, जिन पर लम्बे समय तक मानवीय प्रभाव नहीं पड़ता वे 'अक्षत वनस्पतियाँ' कहलाती है। प्राकृतिक वनस्पतियों को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया है- 1. वन 2. घासस्थल 3. कँटीली झाडियाँ।
- धरती का वह भाग जो सघन वृक्षों से घिरा होता है वन कहलाता है, जो एक नवीकरणीय संसाधन हैं। सामान्यत: वनों की छ: श्रेणियाँ है- 1. उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन 2. उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन 3. शीतोष्ण सदाबहार वन 4. शीतोष्ण पर्णपाती वन 5. भूमध्यसागरीय वन 6. शंकुधारी वन।
- वे समस्त वनस्पतियाँ घास कहलाती हैं, जो पशुओं के चारे के लिए प्रयोग की जाती हैं, गन्ना, बाँस, धान, मक्का आदि घास की ही प्रजातियाँ हैं। कम और अनियमित वर्षा वाले क्षेत्रों में घास के मैदान पाये जाते हैं। प्राय: ये घास के मैदान जङ्गलों और रेगिस्तानों के बीच स्थित होते हैं।
- विश्व में 20% से 40% भूमि पर घास के मैदान पाये जाते हैं। जलवायु की दृष्टि से घास स्थलों की मुख्यत: दो श्रेणीयाँ हैं- 1. उष्ण कटिबन्धीय घास स्थल 2. शीतोष्ण घास स्थल।
- उष्ण कटिबन्धीय घास स्थल भूमध्य रेखा के दोनों ओर विस्तृत है। इन घासस्थलों में पाई जाने वाली वनस्पतियाँ तीन से चार मीटर की उँचाई वाली होती हैं। सामान्यत: उष्णकटिबन्धीय घास स्थलों में हाथी, जेब्रा, जिराफ, हिरण, तेन्दुआ आदि जानवर पाये जाते हैं।
- शीतोष्ण घास स्थल उत्तरी गोलार्द्ध मे कर्क रेखा से आर्कटिक वृत्त तक 66.5° अक्षांश पर और दक्षिणी गोलार्द्ध में मकर रेखा से अन्टार्कटिक वृत्त के मध्य में पाये जाते हैं। शीत घास स्थलों में जङ्गली भैंसा, बाइसन एवं एन्टीलोप नामक जीव पाये जाते हैं।
- जिन प्रदेशों में औसत वार्षिक वर्षा 50% से कम होती है वहाँ कँटीली झाड़ियाँ पाई जाती है। प्राय: कँटीली झाड़ियाँ उष्ण कटिबन्धीय मरू क्षेत्रों एवं महाद्वीपों के पश्चिमी तटों पर पाई जाती हैं। कैक्टस, कैर, खजूर, अकेशिया, बबूल आदि काँटेदार वनस्पतियाँ हैं।
- ऋग्वेद में ऋषि ने वनस्पतियों और उनके विकारों से निर्मित रथादि से मित्रवत् व्यवहार की शिक्षा दी है- "**वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः**" (6.47.26) अर्थात, इनसे हमें उदरपूर्ति, सुरक्षा, आवास, जल आदि सामग्रियाँ प्राप्त होती हैं। अत: वृक्षों से हमें सदैव मित्रवत् व्यवहार करना चाहिए। अथर्ववेद के अनुसार- "**अविर्वै नाम देवतर्तेनास्ते परीवृता। तस्या रूपणेमे वृक्षा हरिता हरितस्रजः**"॥(10.8.31) अर्थात, अवितत्त्व (रक्षक तत्त्व) के कारण वृक्षों में हरियाली रहती है। यजुर्वेद

में शिव को वन, औषधियों, वनस्पतियों, वृक्षों आदि का स्वामी कहा गया है, "**वृक्षाणां पतये नमः। ओषधीनां पतये नमः**" ॥ (16.17 और 19)

- किसी विशेष क्षेत्र में वनस्पति तथा वन्य प्राणियों में पायी जाने वाली विविधता को '**जैव विविधता**' कहते हैं। जैव विविधता के तीन प्रमुख कारक हैं- 1. धरातल 2. जलवायु 3. पारिस्थितिकी तन्त्र।
- पृथिवी के ऊपरी भाग को धरातल (SURFACE) कहते हैं। धरातल के दो भाग हैं- 1. स्थलीय भाग 2. जलीय भाग।
- विस्तृत भू-खण्डों पर लम्बे कालखण्ड के लिए बने रहने वाले वातावरण को 'जलवायु' कहते हैं। जलवायु को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्त्व हैं- 1. तापमान 2. सूर्य का प्रकाश 3. वर्षा।
- किसी भी क्षेत्र की वनस्पतियाँ तथा प्राणी आपस में भौतिक पर्यावरण से अन्तर सम्बन्धित होकर जीवोम का निर्माण करते हैं, जो 'पारिस्थितिकी तन्त्र' कहलाता है।
- भारत में लगभग 47000 विभिन्न प्रजातियों की वनस्पतियाँ पाई जाती है। जैव विविधता की दृष्टि से भारत का विश्व में दसवाँ और एशिया में चौथा स्थान है।
- भारत में पुष्पों की लगभग 15000 प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जो कि विश्व के समस्त पुष्प की प्रजातियों का 6% है तथा लगभग 89000 जीवों के प्रजातियों तथा विभिन्न प्रकार की मछलियाँ नदियों, तालाबों तथा समुद्री जल में पाई जाती हैं।

प्रश्नावली

1. प्राकृतिक वनस्पति से आप क्या समझते हैं? प्राकृतिक वनस्पतियों का वर्गीकरण करते हुए वनों के वर्गीकरण का उल्लेख कीजिए।
2. घास किसे कहते हैं? घास स्थल के प्रकार को विस्तार से समझाइए।
3. वैदिक दृष्टि से वन और वनस्पतियों के महत्त्व का उल्लेख कीजिए।
4. धरातल किसे कहते हैं? उसको प्रभावित करने वाले कारकों का उल्लेख कीजिए।
5. 'पारिस्थितिकी तन्त्र' किसे कहते हैं?

अध्याय- 4

मरुस्थल में जीवन

- ऐसे शुष्क क्षेत्र जिनमें वर्षा का अभाव, उच्च या निम्न तापमान एवं विरल वनस्पतियां होती हैं, 'मरुस्थल' कहलाते हैं। तापमान के आधार पर मरूस्थल को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- 1. गर्म मरुस्थल 2. ठण्डा मरुस्थल। विश्व में मात्र 20% रेतीले मरुस्थल हैं। अण्टार्टिक विश्व का सबसे बड़ा हिम मरुस्थल तथा सबसे बड़ा गर्म मरुस्थल सहारा है।
- शुष्क मरुस्थल में सामान्यत: 50 सेमी से कम वर्षा होती है। इन स्थानों पर रहने वाले जीव शुष्क जलवायु वाले होते हैं। सहारा, मोजावे, थार ऐसे ही मरुस्थल हैं।
- ठण्डे मरुस्थलों में हिमपात होने के कारण शीतकाल में अत्यधिक सर्दी होती है। ये उच्च समतल क्षेत्रों में पाये जाते हैं। अण्टार्कटिका, ग्रीनलैण्ड, लद्दाख और आर्कटिक आदि ठण्डे मरुस्थल हैं।
- सहारा मरुस्थल अफ्रीका महाद्वीप के उत्तरी हिस्से में अटलांटिक महासागर से लाल महासागर तक 56,000 किलोमीटर की लम्बाई में एवं सूडान के उत्तर तथा एटलस पर्वत के दक्षिण में 1,300 किमी. की चौड़ाई तक विस्तृत है। इसका क्षेत्रफल (8.54 लाख वर्ग कि.मी.) यूरोप महाद्वीप के बराबर एवं भारत के क्षेत्रफल के दोगुने से भी अधिक है। सहारा मरुस्थल के अन्तर्गत माली, मोरक्को, मौरतानिया, अल्जीरिया, ट्यूनिशिया, लीबिया, नाइजर, चाड, सूडान एवं मिस्त्र आदि देश आते हैं।
- सहारा एक मरुस्थलीय पठार है जिसकी औसत ऊँचाई 300 मीटर हैं। उष्ण कटिबन्धीय मरुभूमि सहारा का इतिहास लगभग 30 लाख वर्ष पुराना है। यहाँ कुछ ज्वालामुखी पर्वत भी हैं, जिनमें अल्जीरिया का होगर तथा लीविया का टिवेस्टी पर्वत मुख्य हैं। वर्तमान सहारा रेगिस्तान पूर्व के समय में पूर्णत: हरा-भरा मैदान था परन्तु जलवायु परिवर्तन के कारण यह उष्ण और शुष्क क्षेत्र में परिवर्तित हो गया।
- सहारा मरुस्थल में दिन का तापमान 50° सेल्सियस से ऊपर तथा रात का तापमान लगभग 0° सेल्सियस होता है। सहारा के अल्जीरिया (त्रिपोली और लीबिया के मध्य) क्षेत्र में 1922 ई. में 57.7 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया था।
- सहारा मरुस्थल में कुछ ऐसे विशिष्ट क्षेत्र भी हैं, जहाँ मरूउद्यान एवं हरित द्वीप भी पाये जाते हैं। विशाल सहारा रेगिस्तान में विविध वनस्पतियाँ जैसे- कैक्टस, खजूर, ऐकेशिया आदि के वृक्ष तथा अनेक प्रजातियों के जीव जैसे- लकड़बग्घा, ऊँट, सियार, लोमड़ी, बिच्छू, साँप, छिपकली आदि पाए जाते हैं।

- सहारा मरुस्थल के प्रमुख मानव समुदायों में बेदुईन एवं तुआरेग हैं। चलवासी जनजातियाँ दूध, खाल एवं बाल प्राप्त करने के लिए बकरी, ऊँट, घोडे आदि पालते हैं।
- सहारा मरुस्थल में निरन्तर चलने वाली गर्म वायु एवं धूल भरी आँधियों से बचने के लिए लोग भारी वस्त्र पहनते हैं। सहारावासी प्राय: मरु उद्यानों एवं मिश्र की नील नदी घाटी में निवास करते हैं। इस क्षेत्र में लोग खजूर के साथ-साथ चावल, गेहूँ, जौ, सेम एवं कपास जैसी फसलें भी उत्पादित करते हैं।
- सहारा क्षेत्र में खनिज तेल की खोज के उपरान्त विकास तेजी से हुआ है। यहाँ प्राप्त प्रमुख खनिजों में लोहा, फास्फोरस, मैंगनीज एवं यूरेनियम हैं। आज यहाँ आधुनिक शैली के भवनों एवं विशाल राजमार्गों का निर्माण किया जा रहा है। यहाँ के मूलवासी शहरी जीवन की ओर निरन्तर अग्रसर हो रहे हैं।
- 1,66,698 वर्ग कि.मी. के क्षेत्रफल में फैला लद्दाख भारत का सबसे ठण्डा रेगिस्तान है। इसे 'खा-पा-चान' (हिम-भूमि), 'चट्टानी धरती' अथवा 'दर्रों वाली भूमि' भी कहते हैं। यह उत्तर में काराकोरम और दक्षिण में हिमालय पर्वत के मध्य स्थित है। लद्दाख के अन्तर्गत पाक अधिकृत गिलगिट, बलूचिस्तान और चीन अधिकृत अक्साई चीन और शक्सगम घाटी का क्षेत्र भी शामिल है।
- लद्दाख उत्तर-पश्चिम हिमालय में स्थित है, जहाँ का अधिकांश धरातल कृषि योग्य नहीं है। गाडविन आस्टिन (K-2, 8611 मीटर) और गाशारब्रूम (8068) सर्वाधिक ऊँचाई वाली चोटियाँ भी हिमालय के इसी भाग में स्थित हैं। लद्दाख के उत्तर में चीन तथा पूर्व में तिब्बत की सीमाएँ हैं। अत: भारत का सीमावर्ती भूभाग होने के कारण सामरिक दृष्टि से भी लद्दाख का बड़ा महत्त्व है।
- लद्दाख की जलवायु अत्यन्त शुष्क एवं शीतल है। यहाँ वार्षिक वर्षा का औसत 10 से.मी. तथा औसत तापमान 5° सेल्सियस है। यहाँ दिन का तापमान लगभग 0° सेल्सियस तथा रात का तापमान -30° से -40° सेल्सियस तक होता है। सिन्धु नदी को लद्दाख की जीवन रेखा कहा जाता है।
- केन्द्रशासित प्रदेश लद्दाख की राजधानी एवं प्रमुख नगर 'लेह' है, जिसके उत्तर में काराकोरम पर्वत तथा काराकोरम दर्रा है। लेह सड़क एवं वायुमार्ग द्वारा भारत के मुख्य भागों से जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय राजमार्ग 1-ए लेह को कश्मीर घाटी से जोड़ता है। राष्ट्रीय राजमार्ग मनाली-लेह, जुलाई से सितम्बर माह के मध्य खुलता है, जो रोहतांग, बारालाचा, लुनगालाचा, टंगलंग ला से गुजरता है।
- हिमालय के प्रमुख दर्रे हैं- 1. काराकोरम (लद्दाख) 2. रोहतांग (हिमाचल प्रदेश) 3. जोजीला (जम्मू-कश्मीर) 4. नाथूला (सिक्किम) 5. लिपुलेख (उत्तराखण्ड)।
- लद्दाख क्षेत्र शुष्क होने के कारण वनस्पति विहीन है। यहाँ जानवरों के चरने के लिए कहीं-कहीं पर ही घास एवं छोटी-छोटी झाड़ियां मिलती हैं। घाटी में सरपत, विलो एवं पापुलर के वृक्ष देखे जा सकते हैं। ग्रीष्म ऋतु में सेव, खुबानी एवं अखरोट जैसे फलदार वृक्ष भी पल्लवित होते हैं।

- लद्दाख में पक्षियों की विभिन्न प्रजातियाँ पाई जाती हैं। यहाँ विशेषकर बकरी, भेड़, याक आदि दूध, माँस, ऊन वस्त्र बनाने के लिए 'फर' प्राप्त करने के लिए पाले जाते हैं।
- लद्दाख के पूर्वी भाग में अधिकांश बौद्ध तथा पश्चिमी भाग में अधिकांश इस्लाम धर्म के मानने वाले लोग हैं। 'हेमिस गोम्पा' बौद्धों का सबसे बड़ा धार्मिक स्थान है और अन्य धार्मिक स्थलों में 'थिकसे', 'शे' एवं 'लामायुरू' हैं। शीत ऋतु में यहाँ के लोग अधिकांशत: धार्मिक अनुष्ठानों एवं उत्सवों में व्यस्त रहते हैं।
- लद्दाख के निवासी ग्रीष्मकाल में आलू, मटर, सेम, शलजम एवं जौ की खेती करते हैं। यहाँ महिलाएँ घरेलू कार्यों के साथ कृषि एवं छोटे व्यवसाय करती हैं। पर्यटन यहाँ का मुख्य उद्योग है।
- लद्दाख में मिले शिलालेखों से पता चलता है कि, यहाँ सभ्यता और संस्कृति का विकास नव पाषाण काल से प्रारम्भ हुआ था। यहाँ के प्राचीन निवासियों- मोन और दार्द लोगों का वर्णन हेरोडोटस, नोर्चुस, मेगस्थनीज, प्लिनी, टालमी आदि विद्वानों के ग्रन्थों में प्राप्त होता है।

प्रश्नावली

1. मरुस्थल किसे कहते हैं? मरुस्थल के प्रकार को समझाइए।
2. सहारा मरुस्थल के स्वरूप और वहाँ के जन-जीवन का उल्लेख कीजिए।
3. सहारा क्षेत्र की कृषि और पशुपालन पर प्रकाश डालिए।
4. लद्दाख के भौगोलिक स्वरूप और वहाँ के जन-जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालिए।
5. लद्दाख की कृषि और पशुपालन का उल्लेख कीजिए।

अध्याय- 5

मानवीय पर्यावरण एवं अन्योन्य क्रियाएँ

- मानव द्वारा कृत्रिम रूप से प्रयास पूर्वक निर्मित पर्यावरण को 'मानव निर्मित पर्यावरण' कहते हैं, जैसे- मानव बस्तियाँ, भवन, पार्क, मशीनी उपकरण एवं समस्त भौतिक वस्तुएँ आती हैं। मानव निर्मित पर्यावरण का प्रमुख अंग मानव बस्तियाँ हैं। मानव बस्तियों का विकास नदियों के किनारे एवं दोआब क्षेत्रों में अधिक हुआ। उपजाऊ भूमि होने के कारण इन क्षेत्रों में कृषि, व्यापार-वाणिज्य और उद्योगों का अधिक विकास हुआ। विश्व की महान सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे हुआ है, जैसे- सरस्वती-सिन्धु घाटी सभ्यता, मेसोपोटामिया की सभ्यता, नील नदी की सभ्यता आदि।
- लोगों के अधिवास समूहों को 'बस्ती' कहते हैं। मानव बस्तियाँ दो प्रकार की होती हैं- 1. स्थायी बस्ती 2. अस्थायी बस्ती। आज भी घुमन्तु लोग अस्थायी बस्तियाँ बसाते हैं। स्थायी बस्तियाँ दो प्रकार की होती हैं- 1. ग्रामीण बस्ती 2. नगरीय बस्ती।
- ग्रामीण बस्तियों का सम्बन्ध प्रत्यक्षत: भूमि से है। गाँवों में रहने वाले लोग प्राय: प्राथमिक गतिविधियों- कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, आखेट, वानिकी, दस्तकारी सम्बन्धी आदि कार्य करते हैं। ध्रुवों पर रहने वाले लोग बर्फ के घर बनाते हैं, जो 'इग्लू' कहलाते हैं।
- विकास क्रम में नगरीय बस्तियों का विकास अपेक्षाकृत नया है। नगरीय बस्तियों में घर बहु-मंजिला और सघन होते हैं। यहाँ रहने वाले लोग प्राय: व्यापार एवं सेवा क्षेत्रों में संलग्न होते हैं।
- परिवहन से तात्पर्य लोगों एवं वस्तुओं के आवागमन के साधनों से है। परिवहन के तीन प्रमुख मार्ग हैं- 1. स्थल मार्ग 2. जलमार्ग 3. वायु मार्ग। दो प्रकार के स्थल परिवहन हैं- 1. रेल 2. सड़क परिवहन।
- भारतीय रेल नेटवर्क का विश्व में चौथा स्थान है। ट्रान्स-साइबेरियन रेलमार्ग विश्व में सबसे लम्बा रेलमार्ग है, जो रूस की राजधानी मास्को से ब्लादिवोस्टक तक जाता है।
- भारत में राष्ट्रीय मार्गों में 'एक्सप्रेस-वे' नवीनतम हैं। स्वर्ण चतुर्भुजीय महामार्ग दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता और चेन्नई को जोड़ता है।
- 'सञ्चार' से तात्पर्य किसी ज्ञान, भाव या विचारों, सूचनाओं एवं सन्देशों को दूसरों तक पहुँचाना है। आज सञ्चार के क्षेत्र में नए एवं तीव्र संसाधनों के विकास ने विश्व में 'सूचना क्रान्ति' को जन्म दिया है।
- समाचार पत्रों, आकाशवाणी, दूरदर्शन, सचल दूरभाष (मोबाईल), ई-मेल एवं सोशल मीडिया के द्वारा हम बड़ी संख्या में एक साथ लोगों तक सूचना प्रसारित कर सकते हैं।

- महाभारत युद्ध का संजय द्वारा महाराज धृतराष्ट्र किया गया वर्णन वर्तमान समय के सीधा प्रसारण (Live Telecast) का प्राचीन और सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।
- वह क्रिया है जो दो वस्तुओं द्वारा परस्पर सम्पन्न होकर कारण के रूप में भी विवेचित करती है, 'अन्योन्य क्रिया' कहलाती है। अन्योन्य क्रिया के रूप में मानव और पर्यावरण का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है।
- भूमध्य रेखा के दोनों ओर 10° से 10° उत्तरी एवं दक्षिणी अक्षांशों के मध्य के भू-भाग को 'भूमध्य रेखीय प्रदेश' कहते हैं। इसके अन्तर्गत दक्षिणी अमेरिका का उत्तरीभाग, अफ्रीका का मध्यभाग तथा दक्षिण पूर्वी एशिया के द्वीपों को शामिल किया गया है। इसमें मुख्यत: अमेजन बेसिन, कांगो बेसिन, गिनीतट, इण्डोनेशिया मलेशिया तथा सिंगापुर सम्मिलित हैं।
- अमेजन नदी पश्चिमी पर्वतों से निकलकर पूर्व में अन्धमहासागर में मिलती है। यह अपनी अनेक सहायक नदियों (मेरानॉन, काकेट, जिंगु आदि) से मिलकर बेसिन (द्रोणि) का निर्माण करती है। अमेजन नदी का बेसिन विश्व का सबसे बड़ा बेसिन है।
- भूमध्य रेखीय प्रदेश पर (अमेजन बेसिन) वर्ष भर सूर्य की सीधी किरणें पड़ने के कारण तापमान हमेशा उच्च रहता है। इस भू-भाग की जलवायु उष्ण एवं नम होती है। यहाँ का औसत तापमान 23°-37° सेल्शियस तथा औसत वार्षिक वर्षा 200 से.मी. तक होती है।
- उष्ण और नम जलवायु के कारण यहाँ सघन वन पाये जाते हैं। यहाँ भूमध्य रेखीय क्षेत्रों में सदा हरे-भरे रहने वाले चौड़ी पत्ती के वन पाये जाते हैं, जो 'सेल्वा' कहलाते हैं। 'ब्रोमिलायड' नामक पौधा अपनी पत्तियों में जल संचित रखता है। मेंढक जैसे जीव इनका उपयोग अण्डे देने के लिए करते हैं।
- भूमध्य रेखीय प्रदेश (अमेजन बेसिन) में वनों को साफ करके खेती की जाती है, जिसे 'मिल्पा कृषि' कहते हैं। यहाँ चावल, मक्का, गेहूँ, गन्ना, तम्बाकू, कहवा, चाय, कोको, केला, अन्नानास आदि की खेती की जाती है। अमेजन बेसिन में रबड़ की खेती बहुतायत से होती है।
- भूमध्यरेखीय प्रदेश (अमेजन बेसिन) के निवासियों का कद छोटा, रङ्ग काला, नाक चपटी, होठ मोटे होते हैं। ये लोग वृक्षों पर बनी फूँस की झोपड़ी में निवास करते हैं, जबकि कुछ लोग आधुनिक अपार्टमेंट जैसे बने घरों में रहते हैं, जिसे वहाँ 'मलोका' कहते हैं।
- गङ्गा-ब्रह्मपुत्र बेसिन के जलवायु प्रदेशों का विस्तार 10° से 30° उत्तरी अक्षांशों में विस्तृत है। घाघरा, सोन, गण्डक, कोसी और गङ्गा, ब्रह्मपुत्र तथा उनकी सहायक नदियाँ इस जलवायु प्रदेश में अपवाहित होती हैं। गङ्गा-ब्रह्मपुत्र बेसिन में गङ्गा एवं ब्रह्मपुत्र के मैदान, हिमालय के गिरिपाद एवं सुन्दर वन डेल्टा स्थित हैं। ब्रह्मपुत्र नदी को यरलङ्ग (चीन), साम्पो (तिब्बत), देहांग (अरूणचल प्रदेश), जमुना

(बांग्लादेश), मेघना (गङ्गा-ब्रह्मपुत्र की संयुक्त धारा) के नाम से भी जाना जाता है। गङ्गा और ब्रह्मपुत्र बेसिन में मानसूनी जलवायु पायी जाती है। अत: गर्मी और सर्दी दोनों ही अधिक पड़ती हैं। यहाँ मानसून काल में मध्य जून से मध्य सितम्बर तक 200 से 250 से.मी. तक वर्षा होती है।

- ब्रह्मपुत्र के मैदानी भागों में बाँस के झुरमुट पाये जाते हैं। गङ्गा और ब्रह्मपुत्र बेसिन के उपजाऊ भागों में चावल, जूट, चाय, कपास, गन्ना, तिलहन, तम्बाकू, मक्का, गेहूँ, आम, जामुन, लीची, केला, पपीता, अनार, कटहल आदि की खेती होती है। गङ्गा और ब्रह्मपुत्र बेसिन में हाथी, घोड़ा, शेर, चीता, हिरण, गाय, बैल, गैण्डा, ऊँट, बकरी, भेड़, सुअर, बैल, घड़ियाल, विभिन्न प्रकार की मछलियाँ आदि पाये जाते हैं। गंगा नदी में पाई जाने वाली डाल्फिन मछली को हमारे देश का राष्ट्रीय जलीय जीव है। 2014 में गङ्गा नदी के संरक्षण के लिए नमामि गंगे कार्यक्रम चलाया है।
- जन घनत्व से आशय एक वर्ग कि.मी. क्षेत्र निवास करने वाले लोगों की संख्या है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व वाला राज्य बिहार (1102 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी.) और सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाला राज्य अरूणाचल प्रदेश (17 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी) है।
- सम्पूर्ण धरती के लगभग ¼ भाग पर घास के मैदान हैं। भौगोलिक दृष्टि से घास स्थलों की दो श्रेणियाँ हैं- 1. शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान 2. उष्णकटिबन्धीय घास के मैदान। उत्तरी अमेरीका के शीतोष्ण घास के मैदानों को 'प्रेअरी' कहते हैं। इस भू-भाग में स्थानीय पवन 'चिनुक' बहती है। यहाँ चक्रवात-प्रतिचक्रवात के कारण मौसम बदलता रहता है। प्रेअरी क्षेत्र में गेहूँ का सर्वाधिक उत्पादन होने के कारण इसे विश्व का अन्नागार कहा जाता है। प्रेअरी घास स्थल के निवासियों को 'रेड इण्डियन' कहा जाता है, जो अमेरिकी मूलवासी हैं।

प्रश्नावली

1. मानव निर्मित पर्यावरण और उसके प्रमुख अङ्ग बस्ती को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
2. परिवहन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. 'भूमध्य रेखीय प्रदेश' की भौगोलिक स्थित और वहाँ के जनजीवन पर विस्तार से प्रकाश डालिए।
4. गङ्गा-ब्रह्मपुत्र बेसिन का भौगोलिक दशा और विस्तार के साथ जनजीवन का उल्लेख कीजिए।
5. शीतोष्ण कटिबन्धीय घास स्थल पर संक्षेप में टिप्पणी लिखिए।

अध्याय- 6

7 वीं से 18 वीं सदी के मध्य हुए परिवर्तनों को समझना

- 1154 ई. में अरब भूगोलवेत्ता 'अल्-इदरीसी' द्वारा निर्मित विश्व के मानचित्र में भारत के दक्षिण भाग को आज के उत्तरी क्षेत्र के स्थान पर दर्शाया गया है। 1720 ई. में फ्रान्सिसी मानचित्रकार 'ग्विलाम द लिस्ले' ने 'एटलस नूवो' नाम से विश्व का मानचित्र का निर्माण किया था।
- सभी भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा है। ऐतिहासिक अभिलेख संस्कृत भाषा के साथ-साथ अन्य भाषाओं में तथा विश्व के विभिन्न भागों में भी मिलते हैं। हजारों वर्षों के परिवर्तन के साथ भाषा-बोली, खान-पान, रख-रखाव, संस्कृति, संस्कार और व्यवहार में भी परिवर्तन देखा जाता है।
- समय के साथ-साथ सूचनाओं के सन्दर्भ बदलते हैं तो भाषाओं के अर्थ भी बदलते हैं, उदाहरण के लिए 13वीं शताब्दी के इतिहासकार 'मिन्हाज-ए-सिराज' द्वारा अपने ग्रन्थों में प्रयोग किए गए 'हिन्दुस्तान' शब्द का राजनीतिक अर्थ उस काल में आशय दिल्ली के सुल्तान के अधिकार क्षेत्र में आने वाले भूभाग (पञ्जाब, हरियाणा और गङ्गा-यमुना के मध्य स्थित क्षेत्रों) से था।
- 16वीं शताब्दी में जहीरुद्दीन मोहम्मद बाबर ने 'हिन्दुस्तान' शब्द का प्रयोग भारत उपमहाद्वीप के भूगोल और संस्कृति की दृष्टि से किया था। इतिहास अध्ययन में जहाँ एक ओर भारत की पहचान एक भौगोलिक और प्राचीन सांस्कृतिक तत्त्व के रुप में है, वहीं 'हिन्दुस्तान' शब्द से भारत के वे सांस्कृतिक, राजनीतिक और राष्ट्रीय अर्थ नहीं जुडते, जो हम आज जोड़ते हैं।
- मध्ययुग में किसी भी अनजान व्यक्ति को जो उस समाज व संस्कृति का अंग नहीं होता था को हिन्दी में 'परदेशी' और फारसी में 'अजनवी' कहा जाता था इसके लिए आज प्रचलित शब्द 'विदेशी' है। अत: स्पष्ट है कि मध्यकालीन भारत के इतिहास अध्ययन के लिए तथ्यों के साथ-साथ तथ्यों में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ को कालिक दृष्टि से समझना होगा।
- 7वीं से 18वीं सदी तक के भारतीय इतिहास को जानने के लिए स्रोतों के रूप में कुछ पारम्परिक और साहित्यिक स्रोतों तथा इस काल के सिक्कों, शिलालेखों, स्थापत्यों तथा पाण्डुलिपियों पर निर्भर हैं।
- प्राचीन काल से ही शासकों, मठ-मन्दिरों एवं समाज के बौद्धिक जन पाण्डुलिपियों का हस्तलेखन, मूल प्रतियों का प्रतलिपिकरण और संग्रह करते थे, जिनमें शब्दों एवं वाक्यों में भारी परिवर्तन की सम्भावना है, उदाहरणार्थ लगभग 1356 ई. में जियाऊद्दीन बरनी (1285-1358 ई.) ने अपना वृत्तान्त 'तारीखे फिरोजशाही' लिखा था। दो वर्ष बाद पुनः लिखे गए उसी वृत्तान्त में व्यापक अन्तर है।

- 'अभिलेखागार' का अर्थ उस स्थान से है, जहाँ दस्तावेजों, पाण्डुलिपियों आदि को संग्रहित किया जाता है। पर्यावास का अर्थ किसी क्षेत्र के निवासियों की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन शैली है।
- 7वीं से 18वीं सदी के कालखण्ड में निरन्तर परिवर्तित हो रही प्रौद्योगिकी के कारण अनेक प्रकार के आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए थे। समाज में अनेक समुदाय बनने के साथ ही रजनैतिक रूप से राजपूत, कवि और चारणों आदि का महत्त्व बढ़ गया था।
- मध्यकाल के उत्तरार्द्ध में प्राकृतिक पर्यावासों के रूप में बड़े पैमाने पर जङ्गलों को काट कर मैदान बनाए जाने के कारण वनवासियों को अपने प्राकृतिक अधिवास छोड़ने पड़े और वे कृषक बन गए। कृषकों के ये नये समूह भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अंग बन गये। परिणामस्वरूप किसानों के पुराने और नये समूहों में आर्थिक और सामाजिक अन्तर उभरे। धीरे-धीरे लोग अपने मूल व्यवसाय के आधार पर जातियों और उपजातियों में विभक्त होने के साथ ही स्व-समूह के सदस्यों के व्यवहार को नियन्त्रित करने के लिए अपने नियम बनाते थे। जातियों को अपने क्षेत्रीय रीति-रिवाजों का पालन करना पड़ता था।
- इस कालखण्ड में भारत के अनेक क्षेत्रों की भौगोलिक, भाषाई तथा सांस्कृतिक विशेषताएँ स्पष्ट हो चुकी थीं। इस आधार पर भारतीय भू-भाग में अनेक क्षेत्रीय राजवंशों का प्रभाव था। यद्यपि इस काल में अनेक मूल भारतीय राजवंश जैसे- चोल, चेर, पाण्ड्य, चालुक्य, चौहान, परमार वंशीय शक्तिशाली शासकों ने समय-समय पर भारत के एकीकरण में योगदान देते हुए गजनी, गोरी आदि के आक्रमणों को अनेक बार विफल किया था। परन्तु भारतीय शासकों के आपसी टकराव के परिणामस्वरूप भारत में इस्लाम धर्म को मानने वाले अनेक विदेशी शासकों जैसे- खिलजी, तुगलक, लोदी और मुगल आदि ने इस आपसी टकराव का समय-समय पर लाभ उठाते हुए अपना विशाल साम्राज्य खड़ा करते रहे और ध्वस्त होते रहे। इन सभी इस्लामिक शासकों ने भारत में इस्लाम का प्रचार-प्रसार और धर्मान्तण कराया था।
- 18वीं सदी तक मुगल वंश के शासन के अन्त के साथ क्षेत्रीय शक्तियाँ जैसे- मराठे, सिक्ख, राजपूताना, बंगाल, अवध, मैसूर, हैदराबाद आदि के साथ कुछ यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियाँ राजनीतिक शक्ति बनकर उभरने लगीं थी। मुगलों के विशाल साम्राज्य के लम्बे शासनकाल के चलते भारत की क्षेत्रीय प्रकृति, भाषा, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बड़े परिवर्तन हुए थे। परन्तु अनेक छोटे-छोटे क्षेत्रीय राज्यों का शासन बना रहा और उनकी बहुत सी बातें भारत के अधिकांश भागों में फैले इन क्षेत्रों को विरासत में प्राप्त थीं।
- भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लाम धर्म सर्वप्रथम 7वीं सदी में अरब के व्यापारियों, अप्रवासियों तथा इस्लामिक धार्मिक नेता और योद्धाओं द्वारा लाया गया था। इस्लामिक न्याय सिद्धान्तों, धर्म सिद्धान्तों एवं रहस्यवादी विचारों की प्रचलित विभिन्न परम्पराओं में अनेक अन्तर रहे हैं।

- इतिहासकारों ने मध्यकाल के भारतीय इतिहास को तीन कालखण्डों में विभाजित किया है- हिन्दू, मुस्लिम और ब्रिटिश। इस विभाजन के आधार के मूल में था कि ऐतिहासिक दृष्टि से शासकों का धर्म परिवर्तित होता है, जबकि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से कोई विशेष बदलाव नहीं आता।
- मध्ययुगीन भारत में व्यापार एवं वाणिज्य का विकास तीव्र गति से हुआ था। व्यापारीगण सुरक्षादि कारणों से अपने राजा से पारपत्र (आज्ञा पत्र) लेकर समूहों में देश-विदेश में व्यापार करने जाते थे। व्यापारी अपने हितों की रक्षा के लिए गिल्ड (व्यापार संघ) बनाते थे। दक्षिण भारत में इन समूहों को मणिग्रामम् और नानादेशी कहा जाता था। अन्य व्यापारी समूहों में चेट्टियार, मारवाड़ी, ओसवाल, हिन्दू बनिया और मुस्लिम बोहरा आदि थे, जो वर्तमान में भी व्यापार-वाणिज्य के क्षेत्र में अग्रणी हैं।
- भारत के तटीय क्षेत्रों में पत्तनों के विकसित होने के साथ-साथ विदेशी व्यापारी भी बसने लगे थे। कालान्तर में ये क्षेत्र नगरों के रूप में विकसित हुए, उदाहरण के लिए सूरत और मसूलीपट्टनम्। मध्ययुगीन भारत में अनेक नगरों जैसे- दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी, हम्पी और तंजावुर आदि के विकास का कारण राजाओं, महाराजाओं एवं शासकों की राजधानी होना था। तंजावुर नगर चोल शासकों की राजधानी था। यह नगर कावेरी नदी के तट पर बसा होने के कारण बहुत ही समृद्ध था। इस नगर में चोल राजा राजराज ने विश्वप्रसिद्ध भगवान शिव को समर्पित राजराजेश्वर मन्दिर का निर्माण करवाया था। इसके वास्तुकार का नाम कुंजरमलन राजराज पेरूथच्चन था।
- 17वीं-18वीं शताब्दी में यूरोपीय देशों की ईस्ट इंडिया कम्पनियाँ, जब भारत में व्यापार करने आईं तो उन्होंनें अपनी राजनीतिक, प्रशासनिक एवं व्यापारिक गतिविधियों को पूर्ण करने के लिए नये नगरों बम्बई, कलकत्ता और मद्रास जैसे शहरों का विकास किया। मुगलकाल में सूरत व्यापार का बहुत बड़ा केन्द्र था। यहाँ का सूती वस्त्र, सुनहरी, गोटा जरी का काम विश्व में प्रसिद्ध था। यहाँ काढियावाड़ी सेठों, साहुकारों और महाजनों की बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ थी। मसूलीपट्टनम् नगर आन्ध्रप्रदेश के कृष्णा जिले में कृष्णा नदी के किनारे स्थित है, जो मसालों और छींटदार वस्त्र के लिए प्रसिद्ध था।

प्रश्नावली

1. एटलस नूवो मानचित्र का किसने बनाया था?
2. तारीखे फिरोजशाही के लेखक कौन हैं?
3. मध्यकालीन भारत के व्यापारिक वर्ग पर टिप्पणी लिखिए।
4. मध्यकालीन तंजावुर नगर पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।
5. मध्यकाल में सूरत और मसूलीपट्टनम् नगर क्यों प्रसिद्ध था।

अध्याय-7

मध्यकालीन भारत- नए राजवंशों का उदय

- भारतीय उपमहाद्वीप में 7वीं से 12वीं शताब्दी के मध्य अनेक राजवंशों जैसे- चोल, राष्ट्रकूट, पाल तथा गुर्जर-प्रतिहार का शासन था। 6वीं शताब्दी के उपरान्त भारत के अनेक क्षेत्रों में बड़े जमींदारों, योद्धाओं और सरदारों का उदय हुआ था, जिन्हें तत्कालीन शासक अपना सामान्त मानते थे।
- दन्तिदुर्ग वातापी के चालुक्यों के अधीन एक सामन्त था, जिसने 736 ई. के लगभग चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन द्वितीय को हरा कर राष्ट्रकूट राजवंश की स्थापना कर नासिक को अपनी राजधानी बनाया था। इसके उपलक्ष में हिरण्यगर्भ नामक एक अनुष्ठान भी किया था। ऐलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मन्दिर का निर्माण प्रसिद्ध राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम (756-772 ई.) ने करवाया था।
- पाल वंश के संस्थापक गोपाल थे। पाल वंश का शासन 750 से 1174 ई. तक सम्पूर्ण बङ्गाल एवं बिहार प्रान्त में था। पाल वंश के प्रसिद्ध शासक धर्मपाल (775-800 ई.) ने भागलपुर के निकट विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की थी।
- नागभट्ट प्रथम ने 725 ई. में गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य की स्थापना कर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाई थी। गुर्जर-प्रतिहार वंश में वत्सराज, भोजराज प्रथम तथा महेन्द्रपाल प्रथम शक्तिशाली शासक हुए। गुर्जर-प्रतिहार वंश ने भारत के बड़े भू-भाग पर 8वीं से 11वीं शताब्दी तक शासन किया था।
- चोल साम्राज्य की स्थापना विजयालय (850-880 ई.) ने 9वीं शताब्दी में की थी। राजराजेश्वर (985-1014 ई.) और राजेन्द्र प्रथम (1012-1044 ई.) चोल वंश के सर्वाधिक शक्तिशाली शासक थे।
- चोल शासकों के शासन को तमिल साहित्य का स्वर्णकाल माना जाता है। क्योंकी इसी कालखण्ड में कंबन ने 'रामावतार', तोलामोलि ने 'सूलामणि' तथा तिरुतक्कदेवर ने 'जीवक चिंतामणि' नामक प्रसिद्ध तमिल ग्रन्थों की रचना की थी। 12वीं शताब्दी में कल्हण द्वारा 'राजतरङ्गिणी' की रचना की गई थी।
- गुजरात के गुर्जर-प्रतिहार, दक्षिण के राष्ट्रकूट एवं बङ्गाल के पाल शासकों ने कन्नौज पर अधिकार को लेकर 8वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से 10वीं शताब्दी तक लगभग 200 वर्षों तक चलने वाले संघर्ष को त्रिपक्षीय या त्रिराष्ट्र संघर्ष कहा गया है। अन्ततः इस संघर्ष में गुर्जर-प्रतिहार राजाओं की विजय हुई थी।
- इसी कालखण्ड में महमूद गजनी (997-1030 ई.) ने भारत पर सत्रह बार आक्रमण किया था। उसने 1025 ई. में सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण कर वहाँ से अपार धन, सम्पदा लूटकर गजनी ले गया था। महमूद के इतिहासकार अलबरूनी ने 'किताब-अल-हिन्द' नामक ग्रन्थ लिखा था।

- चौहान वंश के शासकों ने 7वीं शताब्दी से लेकर 12वीं शताब्दी तक राजस्थान एवं दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया। राजा अजयराय ने 12वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अजयमेरू (अजमेर) को अपनी राजधानी बनाया था, जिसके कारण चौहानों को अजमेर का चौहान भी कहा जाता है।
- चौहान वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक पृथिवीराज तृतीय (1168-1192 ई.) था। पृथिवीराज 1178 ई. में चौहान तेरह वर्ष की आयु में अजमेर का शासक बना था। उसकी वीरता से प्रभावित होकर उसके नाना अनंगपाल तोमर ने उसे दिल्ली राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया था। 1191 ई. में पृथिवीराज चौहान ने मुहम्मद गोरी को तराइन के प्रथम युद्ध में परास्त किया था। किन्तु 1192 ई. में मुहम्मद गोरी से तराइन के द्वितीय युद्ध पृथिवीराज चौहान की हार के साथ भारत में हिन्दू राजशाही का अन्त हो गया। पृथिवीराज रासो (चन्द्रवरदाई) और प्रबन्ध चिन्तामणि (मेरुतुंगाचार्य) के अनुसार पृथिवीराज चौहान ने मुहम्मद गोरी को इक्कीस बार युद्ध में हराया था।
- शासन व्यवस्था की दृष्टि से चोल वंश के अभिलेखों से पता चलता है कि, उस समय 400 से अधिक कर वसूले जाते थे। वर्तमान पंचायती शासन व्यवस्था चोल प्रशासन की देन है। चोल साम्राज्य में गाँव से लेकर मंडलम् तक स्थानीय स्वशासन की व्यवस्था का प्रचलन था। उस समय गाँवों में दो प्रकार के संगठन कार्य करते थे- 1. उर (सामान्य लोगों का) 2. सभा (विशिष्ट लोगों का)।
- किसी व्यक्ति या राजवंश की प्रशंसा में लिखा गया ग्रन्थ 'प्रशस्ति' कहलाता है। इतिहास की दृष्टि से प्रशस्तियों से राजवंशों को जानने में सहायता प्राप्त होती है। ये प्रशस्तियाँ प्राय: उन विद्वान लोगों द्वारा लिखी जाती थी, जो प्रशासनिक कार्यों में सहायता करते थे।
- इतिहासकारों ने 1206 से 1526 ई. तक के कालखण्ड को सल्तनत काल कहा है। दिल्ली पर शासन करने वाले मुस्लिम वंशों में गुलाम वंश (1206 से 1290), खिलजी वंश (1290 से 1320), तुगलक वंश (1320 से 1414), सैयद वंश (1414 से 1451) तथा लोदी वंश (1451 से 1526) थे।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपने गुरु बख्तियार काकी की स्मृति में दिल्ली के मेहरौली में जहाँ गुप्तकालीन जङ्ग रहित लौह स्तम्भ स्थित है, वहीं 72.5 मीटर ऊँची 'कुतुबमीनार' की नींव 1192 ई. में रखी थी, जिसे इल्तुतमिश ने पूर्ण किया था। इसी मीनार के निकट क़ातुल इस्लाम मस्जिद, जिसे सत्ताईस हिन्दू मन्दिरों को तोड़कर उनके अवशेषों से निर्मित की गई थी। इसके अतिरिक्त कुतबुद्दीन ऐबक ने अजमेर में संस्कृत पाठशाला को तुड़वाकर 'ढाई दिन का झोंपड़ा' नामक मस्जिद का निर्माण भी करवाया था।
- इल्तुतमिश को गुलाम वंश का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है। उसने 1229 ईस्वी में बगदाद के खलीफा से वैधानिक शासक की उपाधि ग्रहण की थी। इल्तुतमिश को 1233-34 ई. में नागदा के गुहिलोत और गुजरात के सोलंकी शासकों ने परास्त किया था। परन्तु उसने इसके बाद इल्तुतमिश ने

मालवा पर आक्रमण कर भिलसा नगर के 300 मन्दिर और महाकाल मन्दिर, उज्जैन को क्षति पहुँचाई। इल्तुतमिश को गुलामों का गुलाम कहा जाता है। क्योंकि वह, ऐबक का दामाद एवं गुलाम था। इल्तुतमिश अपने राज्य का विभाजन इक्ता (प्रान्त) नामक प्रशासनिक इकाईयों में किया था।

- इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद चालीसा सरदारों ने इल्तुतमिश के पुत्र रूकऊद्दीन फ़िरोज की अयोग्यता के कारण इक्तेदारों (प्रान्तपतियों) ने इल्तुतमिश की पुत्री रजिया (1236-1240 ई.) को सुल्तान बनाया था।
- गयासुद्दीन बलबन (1265-1290) जो सुल्तान इल्तुतमिश का दास था अपनी योग्यता के बल पर इक्तादार (प्रान्तपति) बना था। 1265 ई. में सुल्तान बनने के पश्चात बलवन ने चालीसा सरदारों की शक्ति को समाप्त कर दिया था। वह अपने राजत्व सिद्धान्त के लिए भी इतिहास में जाना जाता है।
- 1290 ई. में जलालुद्दीन खिलजी ने खिलजी वंश की स्थापना की थी। अलाउद्दीन खिलजी ने 1296 ई. में अपने चाचा और ससुर जलालुद्दीन खिलजी की हत्या करके दिल्ली का सुल्तान बना था। सुल्तान बनने के बाद अलाउद्दीन खिलजी ने सर्वप्रथम दक्षिण भारत के देवगिरि (1296 ई.) एवं द्वारसमुद्र (1310 ई.) पर अपने सेनापति मलिक काफूर के नेतृत्व में आक्रमण कर वहाँ की धन सम्पदा को लूटा था। 1303 ई. में चित्तौड़गढ़ युद्ध के समय वहाँ की रानी पद्मिनि ने 16000 क्षत्राणियों के साथ जौहर किया था। अलाउद्दीन खिलजी के प्रशासनिक सुधारों में- स्थायी सेना का गठन, सैनिकों को नकद वेतन, घोडों को दागने की प्रथा और बाजार नियन्त्रण व्यवस्था को लागू किया था।
- 1320 ई. में खिलजी वंश के दरबारी खुसरो खाँ को पराजित करके गयासुद्दीन तुगलक दिल्ली का सुल्तान बना था। 1324 ई. में बङ्गाल विद्रोह को सुल्तान गयासुद्दीन ने दमन कर दिया था। दिल्ली के निकट लकड़ी के बने एक महल में आग लगने से गयासुद्दीन तुगलक की 1326 ई. में मृत्यु हो गई थी।
- खुसरो खाँ एक प्रसिद्ध सूफी कवि और इतिहासकार था। वह बलवन, खिलजी तथा गयासुद्दीन तुगलक का कृपापात्र था। उसने इजाज-ए-खुसरवी, बाकिया-नाकिया, अफजल उल-फवैद, तुगलकनामा नामक प्रमुख पुस्तकों की रचना की थी, जो तत्कालीन इतिहास अध्ययन में सहायक हैं।
- मुहम्मद बिन तुगलक (1324-1351 ई.) को अपने कार्यों एवं योजनाओं के कारण सर्वाधिक विवादास्पद सुल्तान माना जाता है। उसके द्वारा गङ्गा-यमुना के दोआब में कर वृद्धि, दिल्ली सल्तनत की राजधानी दिल्ली के स्थान पर दौलताबाद हस्तान्तरित करना, सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन आदि असफल योजनाओं के कारण इतिहाकारों ने उसे पागल बादशाह की उपाधि दी है। मुहम्मद तुगलक की मृत्यु के बाद फिरोजशाह तुगलक 1351 ई. में सुल्तान बना था। उसने अपने शासनकाल में रोजगार दफ्तर, दीवान-ए-खैरात आदि विभागों की स्थापना की थी। फिरोजशाह तुगलक ने सर्वप्रथम इस्लाम के कानून और

उलेमा वर्ग को शासन में प्रधानता दी थी। 1398 ई. में तैमूर के आक्रमण ने तुगलक वंश की सत्ता को समाप्त कर दिया था। 1414 ई. में तैमूर के सेनापति खिज्र खाँ ने उसकी सहायता से दिल्ली की सत्ता प्राप्त कर सैयद वंश के शासन की स्थापना की थी।

- पंजाब का सूबेदार बहलोल लोदी अपनी योग्यता एवं सैन्य क्षमता के बल पर 1451 ई. में दिल्ली का सुल्तान बना था। लोदी वंश का अन्तिम शासक इब्राहिम लोदी था। मेवाड़ के राणा सांगा ने खातोली के युद्ध (1517 ई.) में उसे परास्त कर लोदी वंश के प्रभाव को सीमित कर दिया था।
- बाबर ने 21 अप्रैल 1526 ई. को पानीपत के प्रथम युद्ध में लोदी वंश का अन्त कर दिया था। इसके पश्चात 1527 ई. में खानवा के मैदान में मेवाड़ पर शक्तिशाली शासक राणा सांगा और बाबर के मध्य हुए निर्णायक युद्ध में राणा सांगा की पराजय हुई थी। अब बाबर ने दिल्ली सल्तनत में मुगलवंश की सत्ता स्थापित की थी। बाबर पश्चिम एशिया के दो आक्रान्ताओं, तैमूर एवं चगेज खाँ का वंशज था। मङ्गोल का निवासी होने के कारण बाबर और उसके वंशज 'मुगल' कहलाया।
- बाबर के चार पुत्र थे- हुमायूँ, कामरान, अस्करी और हिन्दाल। 1530 ई. में बाबर की मृत्यु के बाद उसकी वसीयत के आधार पर उसका बड़ा पुत्र हुमायूँ दिल्ली का बादशाह बना था परन्तु उसके भाई इससे सन्तुष्ट नहीं थे और उत्तराधिकार का युद्ध के परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य चार भागों में बँट गया, जिससे हुमायूँ की शक्ति कमजोर हो गई थी। इसी समय बिहार के सूबेदार शेरशाह सूरी ने बङ्गाल को विजित कर सूरी वंश स्थापना कर अपनी शक्ति का विस्तार कर रहा था। हुमायूँ ने शेरशाह की शक्ति को कुचलने का प्रयास किया था परन्तु 1539 ई. में चौसा तथा 1540 ई. में कन्नौज युद्ध में शेरशाह सूरी से न केवल उसे पराजित होना पड़ा अपितु प्राण रक्षा के लिए भारत छोड़ना पड़ा था।
- 1540 ई. में शेरशाह ने उत्तर भारत में सूरी साम्राज्य की स्थापना की थी। अपने 5 वर्ष के अल्पकालिक शासन में उसने नई नगरीय, सैन्य व्यवस्था, रुपया नामक मुद्रा और डाक व्यवस्था आदि स्थापित की थी। मई 1545 ई. में कालिञ्जर दुर्ग के घेरे के समय तोप का गोला लगने से उसकी मृत्यु हो गई।
- 22 जून 1555 ई. में सरहिन्द के युद्ध में हुमायूँ ने सिकन्दर शाह सूरी को परास्त कर पुन: दिल्ली पर अधिकार कर लिया था। 1556 ई. में पुस्तकालय की सीढियों से गिरकर हुमायूँ की मृत्यु हो गयी थी।
- हुमायूँ का पुत्र जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर 13 वर्ष की अल्पायु में 1556 ई. में मुगल राज्य का शासक बना था। अकबर अपने शासन के आरम्भ में अपने संरक्षक बैरम खान, मुगल हरम और अपने घरेलू कर्मचारियों से प्रभावित था। दिल्ली के सम्राट हेमचन्द्र 'हेमू' और अकबर के मध्य 1556 ई. में पानीपत का द्वितीय युद्ध हुआ था, जिसमें हेमू की पराजय हुई थी। सत्ता संभालने के बाद अकबर ने राज्य विस्तार की दृष्टि से 1562 ई. में मालवा, 1572 ई. में गुजरात, 1574 ई. में बङ्गाल, 1581 ई. में काबुल, 1586

ई. में कश्मीर, 1601 ई. में खानदेश को मुगल सत्ता के अधीन कर लिया था परन्तु वह अपने जीवनकाल में मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप को अपने अधीन न कर सका। अकबर ने अपने राज्य विस्तार के लिए 'सुलह-ए-कुल' की नीति अपनाई और वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए थे।

- अकबर ने इस्लाम के साथ-साथ हिन्दूधर्म एवं अन्य पन्थों की शिक्षाओं को मिलाकर 1582 ई. 'दीन-ए-इलाही' की स्थापना की थी। अकबर ने प्रशासन के सुचारू सञ्चालन के लिए उसने नवरत्नों (मंत्रिमण्डल) का गठन किया था। बीरबल, तानसेन, अबुल-फजल, टोडरमल, फैजी, मानसिंह, मुल्ला दो पियाजा, अजीयाओ दीन, अब्दुल रहीम खानखाना बादशाह अकबर के नवरत्न थे। उसने 1571 ई. में फतेहपुर सीकरी को अपनी राजधानी बनाया था। गुजरात विजय के बाद अकबर ने फतेहपुर सीकरी में बुलन्द दरवाजे का (53.63 मी. ऊँचा) निर्माण करवाया था।
- अकबर के तीन पुत्र थे- सलीम (जहाँगीर), मुराद और दानियाल। ज्येष्ठ पुत्र जहाँगीर 1605 ई. में मुगल साम्राज्य का बादशाह बना था। वह चित्रकला का पारखी, न्याय प्रिय शासक और साहित्यकार था। उसने अपनी आत्मकथा तुजुके जहाँगीरी लिखी थी। उसने अपने पिता अकबर के सैन्य अभियानों को आगे बढ़ाने के साथ ही महाराणा प्रताप के पुत्र अमरसिंह से 5 फरवरी 1615 ई. में सन्धि की थी। जहाँगीर की कुल पाँच पुत्र थे- खुसरो, परवेज, खुर्रम (शाहजहाँ), जहाँदार, शहरयार। शासन के अन्तिम वर्षों में जहाँगीर के शासन कार्यों पर नूरजहाँ का प्रभाव था। 1623 ई. में राजकुमार खुर्रम ने विद्रोह कर पिता जहाँगीर को जेल में डाल दिया था। 1627 ई. में कारागृह में ही जहाँगीर की मृत्यु हो गई।
- 1627 ई. में शहजादा खुर्रम ने शाहजहाँ के नाम से मुगल सत्ता सँभाली थी। उसने अपने शासन काल में बुन्देलखण्ड विद्रोह (1627-1636) तथा खाने-जहाँ-लोदी के विद्रोह को (1628-1631) समाप्त किया था। शाहजहाँ के शासन काल में मुगल-सिक्ख (गुरु हरगोविन्द सिंह) संघर्ष में मुगलों की विजय मिली थी। दक्षिण में साम्राज्य विस्तार के लिए अहमदनगर, गोलकुण्डा और बीजापुर आदि राज्यों पर शाहजहाँ ने अपना अधिकार स्थापित कर, इस्लामीकरण को बढ़ावा दिया था। शाहजहाँ के अनेक संतान होने की बात कही जाती है परन्तु उत्तराधिकार संघर्ष में चार पुत्रों का नाम विशेष रूप से लिया जाता है- दारा शिकोह, शाहशूजा, औरंगजेब और मुरादबख्श। शाहजहाँ के शासनकाल को स्थापत्य कला का स्वर्ण युग कहा जाता है। उसने ताजमहल (1632-1653 ई.), दिल्ली का लालकिला (1638-1648 ई.), जामा मस्जिद (1644-1656 ई.) आदि भवनों का निर्माण कराया था।
- 1657-58 ई. के मध्य शाहजहाँ के पुत्रों के बीच हुए उत्तराधिकार के युद्ध में विजयी औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहाँ को आगरा के कैदखाने में कैद कर दिया था, जहाँ 1658 ई. में उसकी मृत्यु हो गई थी।

- उत्तराधिकार के लिए हुए संघर्ष में अपने भाईयों की हत्या कर औरंगजेब ने 1658 ई. में मुगल सत्ता प्राप्त की थी। औरंगजेब एक क्रूर, धर्मान्ध, मुर्तिभञ्जक, साम्राज्यवादी, और कट्टर सुन्नी मुसलमान था। औरङ्गजेब 1663 ई. में उत्तर-पूर्व में उसने अहोमों को पराजित किया था परन्तु अहोमों ने 1680 ई. में पुनः विद्रोह कर दिया। मारवाड़ के राठौड़ राजपूतों ने मुगलों के खिलाफ विद्रोह किया। इन विद्रोहों का मुख्य कारण उनकी आंतरिक राजनीति और उत्तराधिकार के मामलों में मुगलों का हस्तक्षेप करना था।
- औरङ्गजेब के शासनकाल में दक्षिण में मराठा सरदार वीर शिवाजी का अभ्युदय हुआ शीघ्र ही उनका वर्चस्व बढ़ने लगा। शिवाजी के प्रभाव को रोकने के लिए औरङ्गजेब ने अभियान चलाए थे। औरङ्गजेब ने संधि के लिए शिवाजी को आगरा बुलाया और धोखे से कैद कर लिया परन्तु शिवाजी अपनी चातुर्यता से कैदखाने से निकल गये थे। 1674 ई. में शिवाजी ने अपने को स्वतन्त्र शासक घोषित कर मुगलों के विरूद्ध अनेक विजयी अभियान चलाए।
- औरङ्गजेब को उत्तर भारत में सिक्खों, जाटों और सतनामियों, उत्तर-पूर्व में अहोमों और दक्कन में मराठों के विद्रोहों का सामना करना पड़ा था। दक्षिण के विद्रोहों में उलझे औरङ्गजेब की 1707 ई. में मृत्यु हो गई थी। उत्तराधिकार के नियमों का अभाव, धार्मिक कट्टरता, दक्षिण नीति के कारण दिवालिया होना, हिन्दु राजाओं एवं सामन्तों से सम्बन्ध विच्छेद करना, अयोग्य उत्तराधिकारी आदि मुगलवंश के पतन का प्रमुख कारण थे। इतिहासकारों का मानना है कि मुगल साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण औरङ्गजेब की धर्मान्धता और दक्षिण की नीति थी।

प्रश्नावली

1. एलोरा के कैलाश मन्दिर का निर्माण किसने करवाया था?
2. चोल साम्राज्य पर संक्षेप में टिप्पणी लिखिए।
3. त्रिराष्ट्र संघर्ष पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।
4. तुगलक वंश के शासनकाल पर प्रकाश डालिए।
5. औरंगजेब पर संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।

अध्याय- 8

मध्यकालीन भारतीय वास्तुकला

- मध्यकाल में राजमहल और किले सुरक्षादि कारणों से ऊँचे स्थलों, पर्वतों की उपत्यकाओं, जल के मध्य, मैदानों आदि स्थानों पर होता था। इस काल में सार्वजनिक उपयोग के लिए भवनों का निर्माण प्रशासकों, सेठ, साहुकारों एवं व्यापारियों सहित अन्य लोगों के द्वारा भी करवाया जाता था। मन्दिर, मस्जिद, कुएँ, बावड़ी, धर्मशालाएं, सराय तथा बाजार आदि सार्वजनिक भवन होते थे।
- मध्यकालीन हिन्दू राजाओं- चौहान, चन्देल, परमार, प्रतिहार, पाल, राष्ट्रकूट, चोल, चालुक्य एवं मुस्लिम शासकों आदि ने उत्तर से दक्षिण तक पूर्व से पश्चिम तक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा सैन्य महत्त्व के अनेक भवनों का निर्माण कराया था।
- मध्यकालीन स्थापत्य की दृष्टि से वास्तुकार दो खम्भों को सीधा खड़ा करके उनके आर-पार लम्बवत शहतीर रखकर खिड़कीयाँ, दरवाजे और छतों का निर्माण करते थे। इस शैली को अनुप्रस्थ टोडा निर्माण शैली कहते हैं। सल्तनत काल से मुगल काल के मध्य मन्दिरों, मस्जिदों, मकबरों तथा सीढीदार कुओं (बाबड़ियों) के निर्माण में अनुप्रस्थ टोडा निर्माण शैली का प्रयोग अधिक होता था। 12वीं शताब्दी में भारत में इण्डो-ईरानी शैली विकसित हुई। इस शैली के अन्तर्गत खिड़कियों व दरवाजों के ऊपर मेहराब आदि का निर्माण होने लगा था। भवनों की साज-सज्जा पर विशेष ध्यान दिया जाता था।
- मध्यकालीन भारत में हिन्दू शासकों द्वारा अपने इष्टदेव को समर्पित अनेक भव्य और विशाल मन्दिरों का निर्माण करवाया गया था, जो पूजास्थल होने के साथ-साथ सामरिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होते थे। मध्यप्रदेश के खजुराहो में चन्देल वंश के राजा धंगदेव द्वारा 999 ई. का कंदरिया महादेव मन्दिर अपनी अलंकृत शैली, उच्च वास्तु कौशल एवं परिष्कृत उत्कीर्णित मूर्तियों के कारण विश्वविख्यात है। तमिलनाडु राज्य के तञ्जावुर में (1003-1010 ई.) चोल शासक राजराज प्रथम द्वारा निर्मित राजराजेश्वर (वृहदेश्वर) मन्दिर अपनी विशालता एवं स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है। यूनेस्को ने इस मन्दिर को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया है।
- राजस्थान के बूंदी जिले में राजा अनिरुद्ध सिंह की रानी नाथावत जी ने 1699 ई. में जन उपयोग के लिए प्रसिद्ध रानीजी की बाबड़ी सहित अनेक बाबडियों का निर्माण करवाया था।
- मुगल शासक शाहजहाँ ने अपने सिंहासन (तख्त-ए-ताउस) के निर्माण में पितरादुरा शैली को अपनाया था। 18वीं सदी में पितरादुरा शैली का व्यापक प्रचलन था। उत्कीर्णित संगमरमर अथवा बलुआ पत्थर पर रंगीन पत्थरों द्वारा दाब देकर बनाए गए अलंकृत प्रारूपों को 'पितरादुरा' कहा जाता है।

- मध्यकालीन भारत में बीदर की शिल्पकला विश्वप्रसिद्ध थी। यहाँ पर तांबे तथा चांदी की जड़ाई का काम होता था, जिसे 'बीदरी शिल्पकला' कहते हैं। चोलकालीन शासकों के समय मूर्तिकला का विकास चरम स्तर पर था। इस काल की कांस्य मूर्तियां लुप्तमोम तकनीक से बनाई जाती थीं।
- दक्षिण भारत में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हरिहर एवं बुक्का नामक दो यदुवंशी भाइयों ने 1336 ई. में की थी। विजयनगर साम्राज्य का सबसे प्रसिद्ध शासक कृष्णदेवराय (1509-1529 ई.) था। कृष्ण देवराय के दरबार में विश्व प्रसिद्ध वैदिक वाङ्मय के मूर्धन्य विद्वान सायण रहते थे। विजयनगर के शासकों ने प्रसिद्ध मालदेवी नदी पर एक विशाल बांध, पेयजल और सिंचाई के लिए अनेक नहरों तथा जलाशयों का निर्माण करवाया था। विजयनगर आने वाले प्रमुख विदेशी यात्री निकोलो द कोण्टी (इटली), अब्दुर्रज्जाक (ईरान) और डोमिंगो पायस, बारबोसा (पुर्तगाल) हैं।
- 15वीं-16वीं शताब्दी में हम्पी एक सुविकसित एवं समृद्ध नगर था। हम्पी नगर, कर्नाटक राज्य में कृष्णा तथा तुंगभद्रा नदियों की घाटी में स्थित है। हम्पी नगर का नामकरण स्थानीय मातृदेवी पम्पा के नाम पर किया गया था। हम्पी को युनस्को ने 1986 ई. में विश्व विरासत सूची में शामिल किया है।

प्रश्नावली

1. अनुप्रस्थ टोडा निर्माण शैली क्या है?
2. मध्यकालीन हिन्दू शासकों के मन्दिर निर्माण का उल्लेख कीजिए।
3. पितरादुरा शैली को समझाइए।
4. 'बीदरी शिल्पकला' किसे कहते हैं?
5. विजयनगर साम्राज्य पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

अध्याय- 9

जनजातीय और यायावर समुदाय

- वैदिक संस्कृति में मनीषियों की उदार एवं उदात्त विचार चेतना जैसे- 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (सम्पूर्ण वसुधा ही एक कुटुम्ब है।) एवं 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' (जहाँ संसार ही एक घर है।) ने इस सम्पूर्ण प्रायद्वीप को एकता के सूत्र में पिरोये रखा है। अथर्ववेद के अनुसार, 'यया दासान्यार्याणि वृत्रा करः' (20.36.10) अर्थात् राजा इन्द्र ने ज्ञान से वञ्चित लोगों को ज्ञान प्रदान कर श्रेष्ठ मानव बनाया। इस मंत्र में संकेत मिलता है कि श्रेष्ठ और गुणीजनों ने शनैः-शनैः मानव को सुसभ्य और संस्कारित बनाया था। भारत में वैदिक वाङ्मय की उपेक्षा के कारण अनेक जटिल राजनैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक परिवर्तन हुए।
- सामान्यत: ऐसे समाज जो प्रचलित ज्ञान तथा उपासना से वंचित रहकर, जङ्गलों, पहाडों एवं गुफाओं में निवास करते हैं, जनजातीय समाज कहलाते हैं। जनजातीय समाज के लोगों की परम्पराएँ और ज्ञान पद्धति सामान्य समाज से भिन्न होती है। जनजातीय समाज के लोग प्राय: छोटे-छोटे कुलों (कबीलों) में रहते हैं। इनके जीविकोपार्जन का मुख्य साधन कृषि व वनों से प्राप्त होने वाले उत्पाद हैं। जनजातीय समूह के लोग संयुक्त रूप से प्राचीन काल से ही भूमि और चारागाहों पर नियन्त्रण रखते थे। स्वयं के बनाये नियमों के आधार पर परिवारों के मध्य सम्पत्तियों का बँटवारा करते थे।
- भारत के अधिकांश राज्यों- पंजाब में खोखर, राजस्थान में भील व मीणा, जम्मू कश्मीर में गडरिया, मध्यप्रदेश में भील, लम्बादी, बंजारा, गोण्ड, कोल, मुण्डा आदि, उत्तरप्रदेश में थारू, बोक्सा, भोटिया आदि, बङ्गाल, झारखण्ड, बिहार और ओड़िसा में संथाल, कोल आदि, उत्तर-पूर्व में नागा, कर्नाटक और महाराष्ट्र में कोली, बेराद, गुजरात में भील, कोली, पटोलिया, डाफर आदि जनजातियां प्रमुख हैं।
- 1591 ई. में मुगल सेनापति राजा मानसिंह ने चेरों के आन्दोलन का दमन किया था। ब्रिटिश शासन के विरूद्ध 1828 ई.- 1878 ई. तक नागाओं के संघर्ष और 1855 ई. का संथाल विद्रोह हुए।
- यायावर जातियाँ जीविकोपार्जन के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करती रहती हैं, अत: ये घुम्मकड़ और खानाबदोश भी कहते हैं। यायावर लोग प्राय: पशुपालक होते हैं और उनके जीविकोपार्जन का आधार पशु और पशु उत्पाद हैं। यायावर जातियों में बंजारा जनजाति अग्रणी थी। बंजारों के पास बहुत अधिक मात्रा में सामान लाने व ले जाने के लिए हजारों की संख्या में बैल, हाथी, घोड़े, गधे, ऊँट आदि जानवर होते थे, अत: इन्हें सौदागर भी कहा जाता था।
- भारत में नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित विशाल प्रदेश को गोंडवाना कहते हैं। इस क्षेत्र में गोंड नामक जनजाति छोटे-छोटे कुलों में निवास करती थी। प्रत्येक कुल का अपना राजा होता था। अकबरनामा के

अनुसार गढ़कटंगा के गोंड राज्य में 70,000 गाँव थे, जहाँ केन्द्रीकृत शासन व्यवस्था प्रचलित थी। गढ़कटंगा के गोंड राजा अमनदास ने 'संग्रामशाह' की उपाधि धारण की थी तथा उसके पुत्र दलपत ने महोबा के चंदेल राजपूत राजा सालवाहन की पुत्री राजकुमारी दुर्गावती से विवाह किया था। दलपत की अल्पायु में मृत्यु के पश्चात रानी दुर्गावती ने अपने पाँच साल के पुत्र वीर नारायण के नाम से सत्ता की बागडोर संभाली थी। रानी दुर्गावती मुगल सम्राट अकबर के समकालिक थी।

- 1565 ई. में मुगल सेनापति आसिफ़ खान के नेतृत्व में मुगल सेनाओं ने साम्राज्य विस्तार और आर्थिक संपदा प्राप्त करने के लिए गढ़कटंगा पर आक्रमण किया था। रानी दुर्गावती ने मुगल सेना का बहादुरी से सामना किया, अन्ततः रानी की हार हुई और वीर गति को प्राप्त हुई।
- 13वीं सदी में अहोम जनजाति वर्तमान म्यांमार (बर्मा) से आकर ब्रह्मपुत्र घाटी क्षेत्र में बस गई थी। अहोम आग्नेय अस्त्रों के प्रयोग में दक्ष थे। अहोम राज्य बेगार पर आश्रित होने के कारण लोगों से जबरन कार्य करवाते थे। अहोम समाज में बेगार करने वालों को पाइक कहा जाता था। 16वीं सदी में अहोमों ने चुटीयों (1523 ई.) और कोच-हाजो (1581 ई.) को हराकर एक विशाल साम्राज्य की नींव रखी थी। 1662 ई. में मुगल सेनापति मीर जुमला ने अहोम राज्य पर आक्रमण कर अहोमों को परास्त किया था लेकिन मुगल शासक अधिक समय तक उन पर नियन्त्रण नहीं रख सके थे। राजा शिवसिंह के समय (1714-44 ई.) अहोम लोग हिन्दू धर्म में समाहित हो गए थे। बुरंजी नामक ऐतिहासिक ग्रन्थों को पहले अहोम भाषा और बाद में असमिया भाषा में लिखा गया था। उन्होंने संस्कृत के अनेक ग्रन्थों का स्थानीय भाषा में अनुवाद किया था।
- इतिहास में सबसे प्रसिद्ध पशुपालक और शिकारी संग्राहक जनजाति मंगोलों की थी। वे मध्यएशिया के घास के मैदानों (स्टेपी) और उत्तर की ओर वन प्रदेशों में रहते थे। चंगेज खान ने 1206 ई. में मंगोल-तुर्क एकता स्थापित कर विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी।

प्रश्नावली

1. वैदिक संस्कृति की उदात्त विचार और श्रेष्ठ मानव निर्माण पर प्रकाश डालिए।
2. जनजातीय समाज से क्या अभिप्राय है? भारत की प्रमुख जनजातियों के नाम बताइए।
3. गोंडवाना के गोंड साम्राज्य पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।
4. अहोम कौन थे? सामाजिक और राजनीतिक शक्ति के रूप में अहोमों पर प्रकाश डालिए।

अध्याय-10

मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन और क्षेत्रीय संस्कृतियों का उदय

- श्रीमद्भगवद्गीता में उल्लेख है- "सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥" (18.66) अर्थात्, "सम्पूर्ण धर्मों का आश्रय छोड़कर तू केवल मेरी शरणमें आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त कर दूँगा, चिन्ता मत कर। भारत में भक्ति परम्परा का अभ्युदय यहाँ से समझा जा सकता है। पुराणों में भी जाति-पाँति से रहित होकर मानव सच्ची भक्ति से ईश्वर की कृपा प्राप्त कर सकता है। इन उदाहरणों से भारत में भक्ति परम्परा की प्राचीनता को समझा जा सकता है।
- भारत में छठीं शताब्दी में धार्मिक आन्दोलन की शुरुआत हुई। भक्ति आन्दोलन का नेतृत्व दक्षिण भारत के बारह अलवार (वैष्णव) और तिरसठ नयनार (शैव) सन्तों ने किया था। आठवीं शताब्दी में 'अद्वैत' दर्शन के प्रतिपादक शङ्कराचार्य का जन्म आज के केरल राज्य के कालाडी में हुआ था। उनके अनुसार जीवात्मा और परमात्मा दोनों एक ही है। उन्होंने संसार को मिथ्या बताते हुए इसे माया कहने के साथ ही ज्ञान के मार्ग को अपनाने का उपदेश दिया था। रामानुजाचार्य का जन्म ग्यारहवीं शताब्दी में तमिलनाडु में हुआ था। रामानुजाचार्य ने 'विशिष्टाद्वैत' दर्शन का प्रतिपादित किया था। उनके अनुसार आत्मा-परमात्मा से जुड़ने के बाद भी अलग सत्ता बनाए रखती है।
- भक्ति आन्दोलन काल में दक्षिण में वैष्णव संतो द्वारा चार मतों की स्थापना की गई- 1. श्री सम्प्रदाय- रामानुजाचार्य (विशिष्टाद्वैत) 2. ब्रह्म सम्प्रदाय- मध्वाचार्य (द्वैत) 3. वैष्णव सम्प्रदाय- वल्लभाचार्य (शुद्धाद्वैत) 4. सनकादि सम्प्रदाय- निम्बार्काचार्य (द्वैताद्वैत)।
- भक्ति आन्दोलन को दक्षिण भारत से उत्तर भारत में प्रचार- प्रसार करने का श्रेय संत रामानन्द को है। इनका जन्म लगभग 1300 ई. में प्रयागराज में हुआ था। रामानन्द के प्रमुख शिष्य- रैदास (हरिजन), कबीर (जुलाहा), धन्ना (जाट), सेना (नाई), पीपा (राजपूत) आदि थे। कालान्तर में भक्ति परम्परा में दो प्रमुख भक्तिधाराओं का उदय हुआ था- 1. सगुण भक्तिधारा 2. निर्गुण भक्तिधारा।
- सगुण भक्तिधारा में तुलसीदास और नाभादास जैसे राम भक्त तथा निम्बार्क, बल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, सूरदास और मीरा बाई जैसे कृष्ण भक्त हुए। निर्गुण भक्तिधारा सम्प्रदाय के प्रसिद्ध प्रतिनिधि भक्त कबीर थे, इनके अतिरिक्त सन्त रविदास, मलूक दास आदि निर्गुण भक्त थे। कबीर ने सामाजिक जाति-पाँति का विरोध किया था। सन्त कबीरदास (1440 ई.-1518 ई.) सुल्तान सिकन्दर लोदी की समकालीन थे। कबीर ने जाति प्रथा सुधार के साथ निर्गुण ईश्वरोपासना पर बल दिया। कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' नाम से प्रसिद्ध है जिसके तीन भाग हैं- साखी, सबद, रमैनी।

- महाराष्ट्र में 13वीं से 17वीं शताब्दी के मध्य अनेक सन्त हुए जिन्होंने भक्ति का प्रचार-प्रसार जनमानस में किया। ऐसे ही भक्त सन्त ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, समर्थ रामदास, सखूबाई एवं चोखामल, सन्त नरसी मेहता आदि ने भगवान विष्णु के उपासक होने के साथ ही तत्कालीन समाज में फैली कुरीतियों का विरोध तथा मानवतावादी विचारों को बढ़ावा दिया था।
- गुरुनानक देव (1469 ई.-1539 ई.) ने समाज में एकेश्वरवाद, भाई-चारे का सन्देश और सामाजिक एकता पर बल दिया। उनकी शिक्षाओं को गुरुग्रन्थ साहिब में संग्रहीत किया गया है। गुरुनानक देव को सिख धर्म का प्रवर्तक कहा जाता है। सिक्ख धर्म में दस गुरुओं की मान्यता है- नानकदेव, अंगददेव, अमरदास, रामदास, अर्जुनदेव, हरिगोविन्द, हरिराय, हरिकिशन, तेगबहादुर और गोविन्दसिंह। सिक्खों का प्रसिद्ध तीर्थ 'स्वर्ण मन्दिर' जिसका निर्माण 1585-1606 ई. में हुआ था, अमृतसर में विद्यमान है।
- मध्यकाल में चेर राज्य, की स्थापना नौंवी सदी में हुई थी। यह भारत के दक्षिण-पश्चिम भाग में स्थित वर्तमान केरल राज्य का हिस्सा है। यहाँ के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि यहाँ की लिपि और भाषा मलयालम थी। चेर लोग, संस्कृत भाषा और परम्पराओं से अधिक प्रभावित थे। 14वीं सदी का मलयालम व्याकरण एवं काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ लीलातिलकम की रचना मणिप्रवालम शैली में हुई है। यह शैली मणी और प्रवाल के रूप में संस्कृत और क्षेत्रीय भाषा के सह-प्रयोग की ओर संकेत करती है।
- 12वीं सदी में गंगवंशीय राजा अनन्तवर्मन ने जगन्नाथपुरी में भगवान जगन्नाथ जी के मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया था। 1230 ई. में अनंग भीम द्वितीय ने भगवान जगन्नाथ को अपने राज्य का स्वामी घोषित कर स्वयं को उनका प्रतिनिधि बताया था।
- इस्लाम के रहस्यवादी सन्तों को सूफी कहा गया है। वे, ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति तथा सभी मनुष्यों के प्रति दयाभाव रखने पर बल देते थे। इनके निवास स्थान को 'खानकाह' तथा शिष्यों को 'मुरीद' कहा जाता था। दिल्ली के कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, पञ्जाब के बाबा फरीद, दिल्ली के ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया, शेख बुरहानुद्दीन और बन्दानवाज गिसुदराज आदि प्रमुख सुफी सन्त थे। अजमेर के ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती ने भारत में चिश्ती सिलसिले की शुरूआत की थी।
- प्रारम्भिक बङ्गाली साहित्य को दो श्रेणियों में रखा जा सकता है- प्रथम श्रेणी मङ्गल और भक्ति साहित्य तथा दूसरी श्रेणी नाथ साहित्यों की है। नाथ साहित्य का सम्बन्ध नाथ सन्यासियों से है, जो भाँति-भाँति की यौगिक क्रियाएँ करते थे। धर्म ठाकुर ऐसे ही लोकप्रिय क्षेत्रीय नाथ देव हैं। इनकी पूजा प्रायः पत्थर या काष्ठ प्रतिमाओं के रुप में की जाती है। क्षेत्रीय धर्म और लोक परम्परा की दृष्टि से बङ्गाली भाषा में रचित प्रमुख साहित्य मैनामती गोपीचन्द्र के गीत, धर्म ठाकुर की पूजा सम्बन्धित कहानियां, परी कथाएं, लोक कथाएँ तथा गाथा गीत हैं। 15वीं सदी के बङ्गाल में स्थापत्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण अनेक मन्दिरों

का निर्माण हुआ था, जिनकी आकृति दो छतों वाली या चौचाला (चार छतों वाली) होती थी। प्रसिद्ध विष्णुपुर के मन्दिर अपनी उत्कृष्ट सजावट के लिए प्रसिद्ध हैं।

- वर्तमान राजस्थान को अंग्रेज लोग राजपूताना कहते थे। 8वीं सदी में सम्पूर्ण राजस्थान में राजपूत राजाओं का शासन था। इस भूभाग के वीरों की शौर्य, त्याग, धर्मनिष्ठा, लोक साहित्य, संगीत आदि प्रसिद्ध हैं। बप्पा रावल, राणासांगा, राणाप्रताप आदि शूरवीर राजा थे।
- प्राचीन काल में मन्दिरों में कथा व्यासों द्वारा कथक शैली में विविध कथानकों को हाव-भाव तथा संगीत द्वारा अलंकृत कर प्रस्तुत किया जाता था। 15वीं-16वीं सदी में इसी कथक शैली ने कथक नृत्य शैली का स्वरूप धारण कर लिया था। लखनऊ में नवाब वाजिद अली के शासन काल में कथक नृत्य शैली की विशेष उन्नति हुई थी। आज यह नृत्य शैली पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, मध्यप्रदेश और बिहार आदि क्षेत्रों में प्रचलित है। इसके अतिरिक्त भरतनाट्यम (तमिलनाडु), कथकली (केरल), ओडिसी (ओडिशा), कुचीपुडी (आन्ध्र प्रदेश), मणिपुरी आदि शास्त्रीय नृत्य हैं।
- चित्रकारी की दृष्टि से देखा जाय तो प्राचीन भारत में लघु चित्र तालपत्रों या लकड़ी की पटरों पर चित्रित किए जाते थे। पश्चिम भारत में जैन ग्रन्थों को सचित्र बनाने के लिए भी इस कला का प्रयोग किया जाता था। मुगल काल में श्रेष्ठ चित्रकारों को शासकों का संरक्षण प्राप्त था। ये चित्रकार प्राय: पाण्डुलिपियों को चित्रित करते थे। मेवाड़, बीकानेर, जोधपुर, बूँदी और किशनगढ़ आदि चित्रकारी के केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध थे। निहालसिंह द्वारा किशनगढ़ शैली में बनाया गया 'राधारानी' का चित्र, उस काल का सर्वोत्तम चित्र है। 17 वीं सदी में 'बसहोली शैली' का विकास हुआ था। भानुदत्त की 'रसमंजरी' इसी शैली में चित्रित है। हिमालयी क्षेत्र में विकसित चित्रकला शैली को 'कांगड़ा शैली' कहा गया।

प्रश्नावली

1. भारत में भक्ति परम्परा के उदय पर प्रकाश डालिए ?
2. द्वैत और विशिष्टाद्वैत दर्शन के प्रतिपादक कौन थे ?
3. उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन के प्रचार का श्रेय किस संत को है ?
4. गुरु नानकदेव पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए?
5. भारतीय चित्र परम्परा पर संक्षेप में प्रकाश डालिए?
6. कथक नृत्य शैली पर टिप्पणी लिखिए?

अध्याय- 11

अठारहवीं शताब्दी के क्षेत्रीय राजनीतिक शक्तियाँ

- 18वीं सदी में मुगल साम्राज्य में दो अभिजात गुटों- ईरानियों और तूरानिओं का प्रभाव बढ़ गया था। परवर्ती मुगल बादशाह इन गुटों की सक्रिय प्रतिद्वन्दिता के चलते कठपुतली मात्र रह गये। 1739 ई. में नादिरशाह ने दिल्ली पर आक्रमण कर सम्पूर्ण नगर में जमकर लूट मचाई। इसके पश्चात् अहमदशाह अब्दाली ने 1748 ई. से 1761 ई. के मध्य भारत पर पाँच बार आक्रमण करके उत्तर भारत में भारी लूटपाट की थी। निरन्तर कमजोर हो रहे मुगल साम्राज्य के विश्वस्त सुबेदारों ने धीरे-धीरे अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा करने लगे थे।
- निजाम-उल-मुल्क आसफजाह (1724-1748) ने हैदराबाद राज्य की स्थापना की थी। यह मुगल बादशाह फर्रूखसीयर के दरबार का एक अत्यन्त शक्तिशाली सदस्य था। अवध राज्य की स्थापना बुरहान-उल-मुल्क सआदत खान ने 1731 ई. में की थी। मुगल साम्राज्य के विघटन के बाद अवध का उदय एक समृद्धशाली राज्य के रूप में हुआ था। मुर्शीद कुली खान को मुगलों ने बङ्गाल के सूबेदार के रूप में नियुक्त किया था। मुगल शासकों के कमजोर शासन के कारण बङ्गाल उनके नियन्त्रण से अलग हो गया। अलीवर्दी खान (1740-1756) ने बङ्गाल के शासन की नींव रखी थी। राजपूत शासकों जैसे- जयपुर, जोधपुर और मालवा आदि ने अपने नियन्त्रण वाले क्षेत्रों में स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिए थे।
- 1708 ई. में सिक्खों के 10वें गुरु गोविन्द सिंह की मृत्यु के पश्चात् बन्दा बहादुर के नेतृत्व में खालसा ने मुगल सत्ता के खिलाफ विद्रोह किए थे। 18वीं शताब्दी में सिक्खों ने स्वयं को पहले जत्थों में और बाद में मिशलों में संगठित किया था। इन जत्थों और मिशलों की संयुक्त सेनाएँ 'दल खालसा' कहलाती थी। सिक्खों ने राखी कर व्यवस्था प्रारम्भ की थी। इस व्यवस्था में किसानों से उनकी उपज के 20% कर के बदले में उन्हें संरक्षण प्रदान किया जाता था।
- 18वीं शताब्दी के उत्तर काल में सिक्ख राज्य की सीमा सिन्धु नदी से यमुना नदी तक विस्तृत थी। राजा रणजीत सिंह ने विभिन्न सिक्ख समूहों को एकत्र करके सिक्ख साम्राज्य की स्थापना की थी। उन्होंने 1799 ई. में लाहौर को अपनी राजधानी बनाया था। उन्होंने अफगानिस्तान पर विजय प्राप्त कर हरिसिंह नलवा को अफगानिस्तान का सूबेदार नियुक्त किया था, जहाँ शान्ति स्थापना में वे सफल रहे थे।
- छत्रपति शिवाजी ने 1674 ई. में एक स्वतन्त्र मराठा राज्य की स्थापना की थी। 1680 ई. में शिवाजी की मृत्यु के पश्चात् मराठा शासन की बागडोर पेशवा (प्रधानमंत्री) के हाथ में चली गई थी। इस कालखण्ड में मराठा राज्य की सीमाओं का विस्तार सर्वाधिक हुआ था। इनमें पेशवा बाजीराव सर्वाधिक शक्तिशाली थे। पेशवा सदाशिवराव भाऊ के शासन काल में मराठा राज्य की सीमाओं का विस्तार दिल्ली तक हो

गया था। 1720-1761 ई. के मध्य तक मराठा साम्राज्य का विस्तार हुआ था। मराठों ने 1720 ई. में मालवा और गुजरात मुगलों से छीन लिया था। 1730 ई. तक मराठों को दक्षिण भारत का स्वामित्त्व प्राप्त होने के साथ इन क्षेत्रों में चौथ (सुरक्षा कर) और सरदेशमुखी कर वसूलने का अधिकार भी मिल गया था। 1761 ई. में अहमदशाह अब्दाली और पेशवा सदाशिवराव भाऊ के मध्य पानीपत का तृतीय युद्ध हुआ था, जिसमें मराठों की पराजय हुई और उत्तर भारत से मराठों का प्रभाव समाप्त होने लगा था। अब प्रमुख मराठा सरदारों जैसे- सिंधिया, गायकवाड़ और भोंसले ने स्वतन्त्र सेनाएँ एकत्र कर ली थीं। इस काल में उज्जैन और इन्दौर वाणिज्यिक और सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में पुन: प्रतिष्ठा को प्राप्त हुए थे।

- जाट समुदाय मूलत: कृषक थे। 17वीं-18वीं शताब्दी में जाटों ने चूड़ामन जाट के नेतृत्त्व में पश्चिमी दिल्ली के क्षेत्रों में नियन्त्रण स्थापित कर अपनी सुदृढ़ सत्ता स्थापित कर लिया था। इस काल में जाटों के प्रभुत्व वाले क्षेत्र पानीपत तथा बल्लभगढ़ जैसे नगर महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र बनकर उभरे थे।1680 के दशक में जाटों ने दिल्ली और आगरा के क्षेत्रों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। महाराजा सूरजमल जाट सर्वाधिक शक्तिशाली जाट शासक थे। उनके शासन काल में भरतपुर एक शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरा था। 1739 ई. में जब नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण किया था तो उस समय दिल्ली के कई अमीरों ने भरतपुर में शरण ली थी। भरतपुर के अजेय किले को 'लोहागढ़ का किला' कहते हैं। डीग के जल-महल का निर्माण जाट शासक बदन सिंह ने बनवाया था, जो जाट शैली में निर्मित हैं।

प्रश्नावली

1. हैदराबाद राज्य की स्थापना कब और किसने की थी?
2. दल खालसा किसे कहते है?
3. राजा रणजीत सिंह पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
4. मराठों के अभ्युदय पर प्रकाश डालिए।
5. जाट राज्य के उदय पर प्रकाश डालिए।

अध्याय- 12

स्वास्थ्य और सरकार

- भारतीय परम्परा में स्वास्थ्य शब्द का मूल अर्थ अपने में सुन्दर तरीके से स्थिर होना है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए हमारे मनीषियों ने योगमय जीवन जीने पर बल दिया है। श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि- "युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु। युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥" (6.17) अर्थात् स्वस्थ जीवन के लिए आहार-विहार एवं व्यवहार सब कुछ सर्वोत्तम होना चाहिए। "आयु: सत्त्वं बलारोग्य सुखप्रीति विवर्धना:। रस्या: स्निग्धा: स्थिराहृद्या आहरा: सात्विक प्रिया:॥" (17.8) अर्थात् आयु, सत्व, बल, आरोग्य, सुख एवं परस्पर प्रेम बढाने हेतु हमें सात्विक और रुचिकर भोजन ग्रहण करना चाहिए। शारीरिक रूप से स्वास्थ्य शब्द का अर्थ है- तन और मन को विविध बीमारियों और चोटों आदि को मुक्त रखना है। तनावभय ,चिन्ता , आदि से मुक्ति और प्रसन्नतास्वस्थ जीवन का लक्षण है ,।
- सभी नागरिकों को भेदभाव रहित स्वास्थ्य सेवाओं को प्रदान करना लोक कल्याणकारी राज्य का उद्देश्य है। भारतीय संविधान में स्वास्थ्य सेवाएँ राज्य सूची का विषय हैं। भारत में स्वास्थ्य सेवाओं का विभाजन दो भागों में किया जा सकता है -12 सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ .. निजी स्वास्थ्य सेवाएँ।
- सरकार द्वारा लोगों को निःशुल्क या सस्ती दर पर प्रदान की जाने वाली स्वास्थ्य सेवाओं को 'सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा' कहते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (Primary Health Center) होते हैं। इन केन्द्रों में न्यूनतम एक डाक्टर, नर्स और ग्राम स्वास्थ्य सेवक रहते हैं। इन केन्द्रों में सामान्य श्रेणी की बीमारियों का उपचार किया जाता है। इनके अधीन प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र भी होते हैं। ब्लाकस्तर पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र (Community Health Center) होते हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में प्राय: एक से अधिक विशेषज्ञ चिकित्सक होते हैं। यहाँ पर अतिरङ्ग रोगी विभाग (OPD) के साथ-साथ प्रसव एवं सामान्य शल्य चिकित्साओं की सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। जिले में जिला चिकित्सालयों होते हैं। जिला चिकित्सालयों में प्राय: सभी बीमारियों से सम्बन्धित विशेषज्ञ डाक्टर होते हैं। जिला चिकित्सालय का मुख्य चिकित्साधिकारी सभी स्वास्थ्य केन्द्रों की देखरेख और निरीक्षण आदि के कार्य करते हैं और उच्च स्तर पर लोगों को स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करते हैं।
- राज्य और केन्द्र सरकारों ने गम्भीर और जटिल बीमारियों के उपचार, मेडिकल प्रशिक्षण, नये विषयों के शोधों-अनुसंधानों तथा स्वास्थ्य सेवाओं के उचित क्रियान्वयन के लिए चिकित्सा महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थानों की स्थापना की है। देश में स्वास्थ्य सेवाओं

को बेहतर बनाने के लिये 2014 ई. में भारत सरकार ने भारत के विभिन्न भागों में 14 नये एम्स के निर्माण योजना बनाई है। इसी योजना के अन्तर्गत 2022 ई. तक प्रत्येक राज्य में एक एम्स खोलने का निर्णय भारत सरकार ने किया है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान का सृजन 1956 ई. के एक अधिनियम द्वारा एक स्वायत्त संस्थान के रूप में किया गया था।

- चिकित्सकों द्वारा अपने आवास या निजी चिकित्सालयों में लोगों से उचित फीस लेकर उनका उपचार करना 'निजी स्वास्थ्य सेवाएँ' कहलाता है। निजी स्वास्थ्य सेवाओं पर परोक्ष रूप से सरकारी नियन्त्रण नहीं होता है। निजी स्वास्थ्य सेवा को दो भागों में विभाजित किया जाता है- 1. पंजीकृत चिकित्सा व्यवसायी (आर.एम.पी.) 2. स्वंयसेवी संगठनों और ट्रस्टों द्वारा सञ्चालित चिकित्सालय।
- वर्तमान भारत में लगभग प्रतिवर्ष 30,000 से भी अधिक लोग चिकित्सकीय योग्यता प्राप्त करते हैं। भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता अच्छी एवं सस्ती होने के कारण विदेशों से बड़ी संख्या में उपचार कराने के लिए लोग भारत आते हैं, जो 'चिकित्सा पर्यटक' कहलाते हैं।
- आउट पेशेंन्ट डिपार्टमेन्ट (ओ.पी.डी.) को हिन्दी में बाह्यरोगी विभाग कहते हैं। अस्पताल में किसी विशेष वार्ड में भर्ती होने से पहले रोगी ओ.पी.डी. में जाते है। दवाइयों के रासायनिक नाम दवाइयों में प्रयुक्त सामाग्रियों की पहचान करने में मदद करते हैं, जैसे- दर्द और बुखार में दी जाने वाली दवा पैरासीटामॉल को दवा कम्पनियाँ उसी नाम से बेचती हैं तो ये 'जेनेरिक दवा' कही जाती हैं।
- कोराना महामारी से बचाव के लिए कोविडशील्ड और को-वैक्सीन नामक टीकों का आविष्कार भारत में किया गया है। हमारे देश में केन्द्र सरकार द्वारा सभी नागरिकों को नि:शुल्क टीके लगवाये गये हैं तथा आवश्यक होने पर बूस्टर डोज लगवाये जा रहे हैं।

प्रश्नावली

1. भारतीय परम्परा की दृष्टि से स्वास्थ्य को स्पष्ट कीजिए।
2. सार्वजनिक सेवा पर टिप्पणी लिखिए।
3. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की स्थापना किस अधिनियम के द्वारा की गई थी?
4. 'चिकित्सा पर्यटक' किसे कहते हैं?
5. जेनेरिक दवा किसे कहते हैं?

अध्याय-13

राज्य शासन की कार्य प्रणाली

- संसदीय शासन प्रणाली के अन्तर्गत भारतीय संघ को केन्द्र और ईकाईयों (राज्य) में विभाजित किया गया है। केन्द्र और ईकाईयों के मध्य शक्तियों का विभाजन संविधान की सातवीं अनुसूची के अन्तर्गत अनुच्छेद-246 में संघसूची, राज्यसूची एवं समवर्तीसूची के माध्यम से किया गया है।
- संघ सूची में विदेश, रक्षा, रेल आदि सहित वर्तमान में 100 विषय हैं, जिन पर कानून बनाने का कार्य केन्द्र सरकार करती है। राज्य सूची के विषयों पर राज्य सरकारें कानून बनाती हैं। इस सूची में पुलिस, स्थानीय शासन, जेल, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि सहित 61 विषय हैं। समवर्ती सूची में वन, विद्युत, शिक्षा आदि सहित 52 विषय हैं, जिन पर केन्द्र एवं राज्य सरकार दोनों ही कानून बना सकती हैं। यदि दोनों सरकारें किसी एक ही विषय पर कानून बनाती हैं तो केन्द्र सरकार का कानून ही मान्य होगा।
- संविधान द्वारा केन्द्र और राज्यों में शासन व्यवस्था के सुचारू सञ्चालन के लिए शासन के तीन अङ्ग है- 1. विधायिका 2. कार्यपालिका 3. न्यायपालिका।
- ईकाइयों की विधायिका को राज्य विधायिका कहते हैं। राज्य विधायिका से आशय राज्यों में राजनैतिक व्यवस्था की उस संस्था से है, जिसे कानून तथा लोककल्याणकारी नीतियों के निर्माण, परिवर्तन एवं हटाने का अधिकार होता है। राज्यों में विधायिका का निर्माण राज्यपाल, विधायिका के निर्वाचित सदस्य, मुख्यमन्त्री और मन्त्रिमण्डल से मिलकर होती है। राज्य विधायिका में दो सदन होते हैं- 1. विधान सभा (निम्नसदन) 2. विधानपरिषद (उच्चसदन)। वर्तमान में द्विसदनात्मक व्यवस्था के अन्तर्गत 6 राज्यों में विधानपरिषद हैं- उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश और तेलंगाना।
- राज्य का संवैधानिक प्रधान राज्यपाल होता है। उसकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा संविधान के अनुच्छेद-155 के अनुसार केन्द्र सरकार की सिफारिश पर पाँच वर्षों के लिए की जाती है। राज्यपाल विधानसभा में बहुमत दल के नेता को मुख्यमन्त्री की नियुक्त और मुख्यमन्त्री की सलाह से अन्य मंत्रियों की नियुक्ति करता है। विधानसभा से पारित विधेयक राज्यपाल के हस्ताक्षर के बाद ही कानून बनता है। राज्यपाल ही राज्य विधानसभा का सत्र बुलाता है और समाप्ति की घोषणा करता है। राज्य सरकार द्वारा संविधान के अनुसार कार्य न करने की स्थिति में राज्यपाल अपनी रिपोर्ट केन्द्र सरकार को भेजता है।

राज्यपाल बनने के लिए योग्यताएँ-

1. वह भारत का नागरिक हो। 2. वह 35 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हो। 3. वह किसी भी राज्य विधानमण्डल व संसद का सदस्य न हो। 4. वह विधानसभा सदस्य चुने जाने की योग्यता रखता हो।

- प्रत्येक राज्य को कई विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक राज्य में विधानसभा क्षेत्रों की संख्या उस राज्य की जनसंख्या के अनुसार निर्धारित की गई है। प्रत्येक विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र की जनता प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा अपने एक प्रतिनिधि (विधायक) का चयन करती है। विधान सभा की कार्यवाही के सुचारु संचालन के लिए निर्वाचित सदस्यों में से ही विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव किया जाता है, जो सदन में अनुशासन बनाये रखने के साथ विधानसभा की कार्यवाही का सञ्चालन करता है।
- विधानसभा के सदस्य को विधायक कहा जाता है। विधायक को आम भाषा में एम.एल.ए. (मेम्बर ऑफ लेजिस्लेटिव असेम्बली) कहा जाता है। विधानसभा के सदस्य राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति के चुनाव मे इसके भाग लेते हैं। विधानसभा का कार्यकाल 5 वर्षों का होता है। विधायक बनने के लिए आवश्यक योग्यताएं हैं- 1. वह भारत का नागरिक हो। 2. उसका नाम मतदाता सूची में हो। 3. वह 25 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हो। 4. वह पागल या दिवालिया न हो। 5. वह किसी सरकारी लाभ के पद पर न हो। 6. वह न्यायालय द्वारा दो या दो वर्ष से अधिक सजा प्राप्त न हो।
- विधान परिषद के सदस्यों को एम.एल.सी. (Member of Legislative Council) कहा जाता है। इसके सदस्यों का चुनाव अप्रत्यक्ष रीति से होता है। कुछ सदस्य राज्यपाल द्वारा मनोनीत किये जाते हैं। इसका सदस्य बनने की न्यूनतम उम्र 30 वर्ष है। इसके सदस्यों का निर्वाचन छ: वर्ष के लिए होता है।
- मुख्यमन्त्री राज्य का राजनैतिक प्रमुख तथा कार्यपालिका का वास्तविक प्रधान होता है। मुख्यमन्त्री की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा 5 वर्ष के लिए की जाती है। परन्तु समय से पूर्व वह अपना बहुमत खो दे तो उसकी नियुक्ति समय से पूर्व भी समाप्त हो जाती है। वह विधानसभा में विधायक दल का नेता होता है। मुख्यमन्त्री की सलाह पर राज्यपाल अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति करता है। मुख्यमन्त्री मन्त्रिपरिषद के बैठकों की अध्यक्षता करता है तथा वह मन्त्रिपरिषद के प्रति जबाबदेह होती है।
- अनुच्छेद 110 के अनुसार किसी कर का अधिरोपण, उत्सादन, परिहार, परिवर्तन या विनिमय करता हो धनविधेयक कहलाता है। धनविधेयक को केवल विधानसभा में ही प्रस्तुत किये जाते हैं। विधानसभाओं को वित्तीय मामलों में पूर्ण नियन्त्रण प्राप्त है।

प्रश्नावली

1. संविधान द्वारा केन्द्र और राज्य के मध्य शक्ति विभाजन को समझाइए।
2. राज्यपाल बनने की योग्यता का उल्लेख कीजिए।
3. विधायक बनने की योग्यता का उल्लेख कीजिए।
4. धन विधेयक किसे कहते हैं?

अध्याय- 14

सञ्चार माध्यम और विपणि: (बाजार) की समझ

- लोगों को सूचनाओं या सन्देशों का आदान-प्रदान करने वाले साधनों को सञ्चार माध्यम कहते हैं। टेलीविजन, रेडियो, समाचार-पत्र, सोशल मीडिया आदि सञ्चार माध्यमों के आधुनिक रूप हैं। भारत में मोबाईल सेवा का प्रारम्भ 21 जुलाई 1995 ई. में हुआ था। पश्चिमी बङ्गाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने सञ्चार मंत्री सुखराम से मोबाईल पर पहली बार बात की थी।
- सेंसरशिप से आशय सरकार की उस शक्ति से है, जिसके द्वारा सरकार कुछ विवरणों को प्रकाशित या प्रदर्शित करने पर रोक लगा सकती है। देश में आपातकाल लागू होने पर प्रेस की स्वतन्त्रता को प्रतिबन्धित करने का सम्पूर्ण अधिकार सरकार के पास होता है। 1975 ई. में इन्दिरा गांधी सरकार ने प्रेस की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगाया था।
- किसी उत्पाद और सेवा को बेचने अथवा प्रवर्तित करने के उद्देश्य से किया जाने वाला जन सञ्चार, विज्ञापन (Advertise) कहलाता है। विज्ञापन मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं- 1. वाणिज्यिक 2. सामाजिक 3. सरकारी। वाणिज्यिक विज्ञापनदाता अक्सर उपभोक्ताओं के मन में कुछ गुणों के साथ एक उत्पाद का नाम या छवि छोड़ जाते हैं, जिसे 'ब्रान्डिंग' कहते हैं। यह वस्तु या सेवा की बिक्री बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाता है। ऐसे विज्ञापन जिनसे सामाजिक सन्देश प्राप्त होते हैं, सामाजिक विज्ञापन कहलाते हैं, जैसे- सुरक्षित रेलवे क्रासिंग को पार करने से सम्बन्धित विज्ञापन आदि।
- बाजार, वह स्थान जहाँ पर लोग अपनी आवश्यकताओं की वस्तुओं का क्रय-विक्रय करते हैं। बाजार मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं- 1. प्रतिदिन खुलने वाले बाजार 2. साप्ताहिक बाजार (हाट)। ऐसे बाजार जहाँ पर लोगों की आवश्यकता की प्रत्येक वस्तु एक ही स्थान पर उपलब्ध होती है, 'शॉपिंग मॉल' कहलाते हैं। ऐसे बाजार जो निश्चित स्थान पर सप्ताह में एक बार लगाये जाते हैं, 'साप्ताहिक बाजार' कहलाते हैं। जनसञ्चार संसाधनों के विकास के करण अब हम ऑनलाइन माध्यम से घर बैठे वस्तुओं को अपने लिए मंगवा लेते हैं। आधुनिक बाजार का यह नया विकसित स्वरूप है।

प्रश्नावली

1. सञ्चार माध्यम क्या है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
2. सेन्सरशिप किसे कहते हैं?
3. विज्ञापन किसे कहते हैं? वर्गीकरण सहित समझाइए।
4. बाजार किसे कहते हैं? वर्गीकरण सहित समझाइए।

अध्याय-15

समानता एवं लिंग बोध

- मनुस्मृति में सामाजिक संरचना का मूल आधार लोक मंगल की कामना एवं समाज का सर्वतोमुखी विकास को बताया गया है। "लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादतः। ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत्॥" (मनुस्मृति-1.31) अर्थात, 'ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र ब्रह्म की अन्तिम सूक्ष्म सृष्टि हैं।' ऋग्वेद में ऋषि कहता है, "समानी व आकूति: समाना हृदयाति व:। समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति॥" (ऋ.10.191.4) अर्थात, 'तुम्हारे मन, हृदय और संकल्प समान हो सब लोग मिलकर रहो।' "सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवाभागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥" (ऋ.10.191.2) अर्थात, 'हम सब सदैव एक साथ चले, हम सब सदैव एक साथ बोले, हम सभी का मन एक जैसा हो। हमारे विचार समान हों, हम मिलकर रहें। हम सभी ज्ञानी बनें, विद्वान बनें।' "अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधु: सौभगाय॥" (ऋ.5.60.5) अर्थात, 'हे पृथिवी वासियों न तुमसे कोई बड़ा है और न छोटा तुम सब भाई-भाई हो सौभग्य की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ो।' वैदिक वाङ्मय के इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि भारतीय परम्परा में प्राचीनकाल में भेद-भाव रहित, समानता और मानवता से अनुप्राणित लोककल्याण का चिन्तन व्यक्त किया गया है।
- समानता एक व्यापक अवधारणा है, जिसके अन्तर्गत सामान्यत: लोगों के बीच मूलभूत समानता, अवसरों की समानता, स्थितियों की समानता, परिणामों की समानता आदि को देखा जा सकता है। समानता से आशय है कि किसी समाज की वह स्थिति जिसमें समाज के सभी लोगों को समस्त सार्वजनिक संसाधनों पर समान अधिकार हो। सामाजिक समानता के लिए कानून के समक्ष समान अधिकार इसकी न्यूनतम आवश्यकता होती है।
- भारतीय संविधान एक जीवन्त दस्तावेज है, जिसमें देश की जनता और सरकार द्वारा पालन किए जाने वाले नियमों अधिनियमों को निरुपित किया गया है। इसी संविधान में नागरिकों के मौलिक अधिकारों के रूप में समानता के अधिकारों का उल्लेख संविधान के भाग-2 में अनुच्छेद 14 से 18 के अन्तर्गत कानून, धर्म, नस्ल, जाति, लिंग, जन्म, स्थान आदि सभी को समान माना है। भारत के सभी नागरिकों को जो 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के हैं को मतदान का अधिकार है। सरकार ने स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए 33% पद उनके के लिए आरक्षित किये हैं।
- भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी पाटिल, प्रथम महिला रेलचालक सुरेखा यादव प्रथम महिला लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार, प्रथम महिला पायलट सरला ठकराल आदि हैं।

प्रश्नावली

1. वैदिक वाङ्मय की दृष्टि से 'सामाजिक समानता' पर संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।
2. समानता की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
3. भारतीय संविधान में समानता के अधिकार का उल्लेख किस अनुच्छेद में किया गया है?
4. सरकार ने स्थानीय स्वशासन में महिलाओं को कितने % आरक्षण प्रदान किया है?
5. भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति कौन थीं?
6. भारत की प्रथम महिला पायलट कौन थीं?

परिशिष्ट - राज्य, उनकी राजधानी, जिलों की संख्या, क्षेत्रफल एवं जनसंख्या

क्रं.	राज्य	राजधानी	जिलों की संख्या	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. में	जनसंख्या
1.	आंध्र प्रदेश	हैदराबाद	26	2,75,060	8,46,53,533
2.	अरुणाचल प्रदेश	ईटानगर	19	83,743	13,82,611
3.	असम	दिसपुर	35	78,438	3,11,69,272
4.	बिहार	पटना	38	94,163	10,38,04,637
5.	छत्तीसगढ़	रायपुर	32	1,36,034	2,55,40,196
6.	गोवा	पणजी	02	3,702	14,57,723
7.	गुजरात	गाँधी नगर	35	1,96,024	6,03,83,628
8.	हरियाणा	चंडीगढ़	22	44,212	2,53,53,081
9.	हिमाचल प्रदेश	शिमला	12	55,673	68,56,509
10.	झारखण्ड	राँची	24	79,714	3,29,66,238
11.	कर्नाटक	बंगलोर	30	1,91,791	6,11,30,704
12.	केरल	तिरूवनंथपुरम्	14	38,863	3,33,87,677
13.	मध्य प्रदेश	भोपाल	50	3,08,000	7,25,97,565
14.	महाराष्ट्र	मुंबई	36	3,07,713	11,23,72,972
15.	मणिपुर	इम्फाल	09	22,327	27,21,756
16.	मेघालय	शिलांग	11	22,327	29,64,007
17.	मिजोरम	आइजौल	08	21,081	10,91,014
18.	नागालैंड	कोहिमा	12	16,579	19,80,602
19.	ओडिशा	भुवनेश्वर	30	1,55,707	4,19,47,358
20.	पंजाब	चंडीगढ़	23	50,362	2,77,04,236
21.	राजस्थान	जयपुर	33	3,42,239	6,86,21,012
22.	सिक्किम	गंगटोक	04	7,096	6,07,688
23.	तमिलनाडु	चेन्नई	38	1,30,058	7,21,38,958
24.	त्रिपुरा	अगरतला	08	10,49,169	36,71,032
25.	उत्तराखण्ड	देहरादून	13	53,484	1,01,16,752
26.	उत्तरप्रदेश	लखनऊ	75	2,38,566	19,95,81,477
27.	पश्चिम बङ्गाल	कोलकाता	23	88,752	9,13,47,736

क्रं.	केन्द्र शासित राज्य	राजधानी	जिलों की संख्या	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. में	जनसंख्या
1.	अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह	पोर्ट ब्लेयर	3	8,249	3,79,944
2.	चंडीगढ़	चंडीगढ़	1	114	10,54,686
3.	दादर और नागर हवेली दमन और दीव	दमन	3	603	5,85,764
4.	जम्मू और कश्मीर	श्रीनगर	20	2,22,236	1,25,00,000
5.	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली	दिल्ली	9	1,483	1,67,53,235
6.	लक्षद्वीप	कवरत्ती	1	32	64,429
7.	पुदुच्चेरी	पुदुच्चेरी	4	492	12,44,464
8.	लद्दाख	लेह	2	1,66,698	2,74,289
28.	तेलंगाना	हैदराबाद	33	1,14,840	3,51,93,978

चारधाम
बद्रीनाथ (उत्तराखण्ड)
केदारनाथ (उत्तराखण्ड)
गंगोत्री (उत्तराखण्ड)
यमुनोत्री (उत्तराखण्ड)
बदरी, ज्योतिष पीठ
अथर्ववेद
केदारेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग
द्वारका, कालिका पीठ
सामवेद
विश्वनाथ ज्योतिर्लिङ्ग
ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग
वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग
महाकालेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग
नागेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग
सोमनाथ ज्योतिर्लिङ्ग
घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग
त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग
भीमाशंकर ज्योतिर्लिङ्ग
पुरी, गोवर्धन पीठ
ऋग्वेद
मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्ग
सप्त मोक्ष पुरियाँ
हरिद्वार
मथुरा
अयोध्या
काशी
द्वारिकाधाम
उज्जयिनी
कांची
शृङ्गेरी, शारदा पीठ
यजुर्वेद
रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

द्वारा सञ्चालित एवं प्रस्तावित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - ४५६००६ (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in